नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 118
दि. 31.01.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

शोक के साए में सत्ता की नई सुबह, सुनेत्रा पवार के हाथों में महाराष्ट्र की कमान

(जीएनएस)। मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति ने एक ऐसा मोड़ देखा है, जहां गहरे शोक, असमय त्रासदी और सत्ता की अनिवार्यता एक साथ आ खड़ी हुई हैं। उपमुख्यमंत्री अजित पवार की विमान दुर्घटना में आकस्मिक मृत्यु ने न सिर्फ उनके परिवार और समर्थकों को तोड़ दिया, बल्कि राज्य की राजनीति में भी एक बड़ा खालीपन पैदा कर दिया। पूरे महाराष्ट्र में शोक की लहर है, बारामती से मुंबई तक सन्नाटा और संवेदनाओं का ज्वार है, लेकिन इसी शोक के बीच सत्ता के संतुलन और सरकार की स्थिरता बनाए रखने की प्रक्रिया भी तेजी से आगे बढ़ रही है। इसी क्रम में यह लगभग तय हो चुका है कि अजित पवार की पत्नी और राज्यसभा सांसद सुनेत्रा पवार राज्य की पहली महिला उपमुख्यमंत्री बनने जा रही हैं। शुक्रवार शाम तक राजनीतिक गलियारों में यह संदेश स्पष्ट हो गया कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अजित पवार गुट ने नेतृत्व की बागडोर सुनेत्रा पवार को सौंपने का मन बना लिया है। वरिष्ठ नेता और मंत्री छगन भुजबल ने सार्वजनिक रूप से संकेत दिया कि पार्टी और सरकार दोनों स्तर पर सहमति बन चुकी है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी सैद्धांतिक तौर पर इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति जता दी है। शनिवार सुबह 11 बजे एनसीपी विधायक दल की बैठक बुलाई गई है, जिसमें औपचारिक रूप से नेता के चयन की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। यदि इस बैठक में सुनेत्रा पवार को विधायक दल का नेता चुना जाता है, तो उसी दिन उनके शपथ ग्रहण की भी संभावना जताई जा रही है। बताया जा रहा है कि यह फैसला अचानक नहीं लिया गया, बल्कि इसके पीछे घंटों की गहन चर्चा, संतुलन की राजनीति और संभावित टूट से बचने की रणनीति रही है। सूत्रों के अनुसार, शुक्रवार को एक अहम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मुंबई से सुनील तटकरे और प्रफुल्ल पटेल ने सुनेत्रा पवार से सीधी बातचीत की। इसी बातचीत में पहली बार औपचारिक रूप से उपमुख्यमंत्री पद का प्रस्ताव उनके सामने रखा गया। शुरुआती तौर पर सुनेत्रा पवार ने व्यक्तिगत शोक और पारिवारिक परिस्थितियों का हवाला देते हुए हिचक दिखाई, लेकिन पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने उन्हें समझाया कि यह सिर्फ सत्ता का सवाल नहीं, बल्कि एनसीपी और सरकार की स्थिरता का मुद्दा है। अंततः पार्टी और राज्यहित को प्राथमिकता देते हुए उन्होंने पद स्वीकार

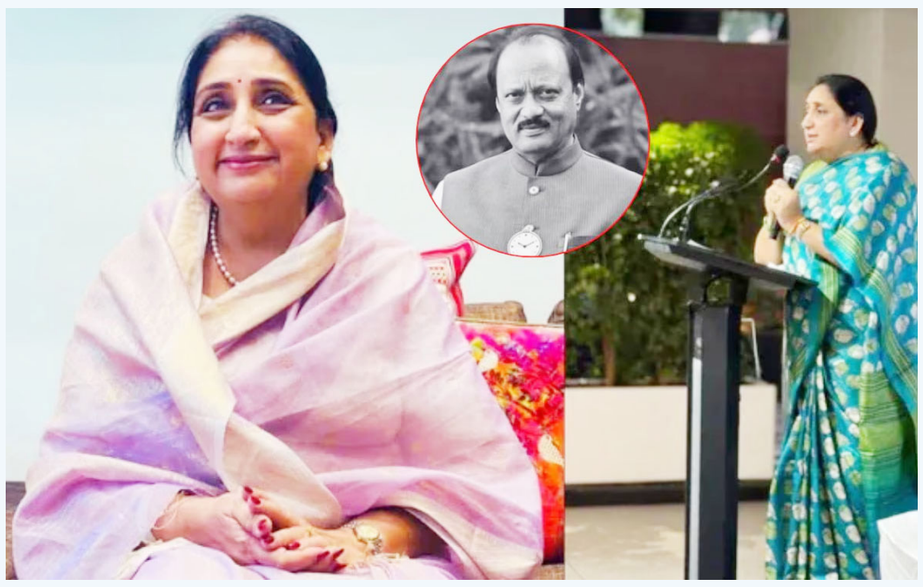

करने पर सहमति जता दी।

इस पूरे घटनाक्रम में दिलीप वलसे पाटिल की भूमिका को बेहद अहम माना जा रहा है। वे ऐसे नेता माने जाते हैं, जिन पर शरद पवार और अजित पवार—दोनों खेमों का भरोसा रहा है। प्रफुल्ल पटेल के आग्रह पर उन्होंने अपने सभी कार्यक्रम रद्द किए और तुरंत मुंबई पहुंचे। उन्हीं की पहल पर एनसीपी विधायकों की निर्णायक बैठक बुलाई गई, ताकि किसी भी तरह की गुटबाजी या असंतोष को उभरने से पहले ही रोका जा सके। पार्टी के अंदर यह स्पष्ट राय थी कि यदि यह जिम्मेदारी किसी और को दी जाती, तो विधायकों में टूट और खींचतान की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता था। शुक्रवार को मुख्यमंत्री आवास पर भी उच्चस्तरीय राजनीतिक गतिविधियां देखने को मिलीं। प्रफुल्ल पटेल, छगन भुजबल, सुनील तटकरे और धनंजय मुंडे जैसे दिग्गज नेताओं ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से करीब डेढ़ घंटे तक चर्चा की। इस बैठक में सरकार के भविष्य, एनसीपी की भूमिका और अजित पवार के बाद उत्पन्न राजनीतिक शून्य को लेकर विस्तार से विचार-विमर्श हुआ। देर शाम एनसीपी कार्यालय में हुई प्रेस वार्ता में छगन भुजबल ने साफ किया कि यदि विधायक दल की बैठक में सुनेत्रा पवार को नेता चुना जाता है, तो शपथ ग्रहण में कोई देरी नहीं की जाएगी। सुनेत्रा पवार फिलहाल राज्यसभा सांसद हैं, लेकिन उपमुख्यमंत्री पद की संवैधानिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें विधानमंडल के किसी सदन का सदस्य बनना होगा। इस दिशा में भी तैयारी शुरू हो चुकी है। अजित पवार के निधन से खाली हुई बारामती विधानसभा सीट को लेकर पार्टी में स्पष्ट रणनीति है कि सुनेत्रा पवार वहीं से चुनाव लड़ेंगी। बारामती सिर्फ एक सीट नहीं, बल्कि पवार परिवार और एनसीपी की राजनीतिक पहचान का प्रतीक रही है। माना जा रहा है कि इस सीट से चुनाव लड़कर सुनेत्रा पवार न केवल अपने पति की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाएंगी, बल्कि पार्टी कार्यकर्ताओं को भी एक भावनात्मक संबल देंगी। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस पूरे घटनाक्रम पर संतुलित बयान देते हुए कहा है कि जो भी निर्णय होगा, वह एनसीपी का आंतरिक फैसला होगा और भारतीय जनता पार्टी सरकार के सहयोगी के रूप में उनके साथ मजबूती से खड़ी रहेगी। उन्होंने यह भी कहा कि चाहे मामला अजित पवार के परिवार का हो या पार्टी का, सरकार हर स्तर पर सहयोग करेगी। उनके इस बयान को सत्ता में स्थिरता और गठबंधन धर्म के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

इधर, दिन भर मुंबई से अमरावती तक बैठकों का दौर चलता रहा। एनसीपी के वरिष्ठ नेता शुक्रवार सुबह फडणवीस से मिलने उनके आवास वर्षा बंगले पहुंचे, जहां उपमुख्यमंत्री पद और विभागों के संतुलन को लेकर चर्चा हुई। वहीं दूसरी ओर, सुनेत्रा पवार ने बारामती में अजित पवार के चुनावी रणनीतिकार नरेश अरोड़ा को बुलाया। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यह कदम संकेत देता है कि सुनेत्रा पवार अब सक्रिय राजनीति में पूरी तरह उतरने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो चुकी हैं।

इस बीच, अजित पवार की विमान दुर्घटना को लेकर विपक्ष ने भी सवाल खड़े करने शुरू कर दिए हैं। कांग्रेस नेता विजय वडेट्टीवार ने इस हादसे के पीछे गहरी साजिश की आशंका जताते हुए उच्च स्तरीय जांच की मांग की है। उनका कहना है कि ऐसे समय में, जब एनसीपी के दोनों गुटों के एकीकरण की चर्चाएं तेज थीं, इस तरह की घटना कई संदेह पैदा करती है। एनसीपी के भीतर भी कुछ नेताओं ने संकेत दिया है कि अजित पवार दोनों गुटों के विलय को लेकर गंभीर प्रयास कर रहे थे और उनके पास पार्टी के भविष्य का एक स्पष्ट रोडमैप था।

कुल मिलाकर महाराष्ट्र की राजनीति इस वक्त एक ऐतिहासिक और संवेदनशील दौर से गुजर रही है। एक ओर एक बड़े नेता की असमय विदाई का शोक है, तो दूसरी ओर सत्ता की जिम्मेदारी संभालने की चुनौती। यदि सुनेत्रा पवार उपमुख्यमंत्री पद की शपथ लेती हैं, तो यह न केवल राज्य की पहली महिला डिप्टी सीएम बनने का क्षण होगा, बल्कि पवार परिवार और एनसीपी के लिए भी एक नए राजनीतिक अध्याय की शुरुआत मानी जाएगी। शोक, संवेदना और सत्ता—तीनों के बीच संतुलन साधना अब उनकी सबसे बड़ी परीक्षा होगी।

कोलकाता: आरजी कर मेडिकल कॉलेज दुष्कर्म-हत्या मामले में पीड़िता का परिवार सीबीआई जांच से नाखुश, न्याय की मांग जोर पकड़ रही

(जीएनएस)। नार्थ 24 परगना। कोलकाता में आरजी कर मेडिकल कॉलेज में हुई शर्मनाक दुष्कर्म और हत्या की घटना की गूंज अब भी समाज और परिवार दोनों में गहरे सदमे का कारण बनी हुई है। मामले की गंभीरता को देखते हुए केंद्रीय जांच एजेंसी सीबीआई को जांच सौंपी गई थी, लेकिन पीड़िता के परिवार ने हालिया घटनाक्रम और न्याय प्रक्रिया से अपनी नाराजगी जाहिर की है। परिवार का आरोप है कि न्याय की प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी और कोर्ट की सुनवाई में गंभीर procedural खामियां रही हैं, जिससे उन्हें न्याय मिलने में आशंका है।

पीड़िता के पिता ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि अब तक केवल एक व्यक्ति को दोषी ठहराया गया है, जबकि मामले में कई और पहलू और आरोपी हैं। उनके अनुसार, सुनवाई अधिकांशतः बंद कमरे में की गई और परिवार को कोर्टरूम में प्रवेश नहीं दिया गया, जिससे वे मामले की वास्तविक स्थिति और गवाहों के बयान को सही ढंग से नहीं देख सके।

उन्होंने कहा कि यदि उन्हें अदालत में उपस्थित होकर मामले को नजदीक से देखने और तथ्यों को सामने रखने का मौका मिलता, तो कई विरोधाभासी बयानों को सही तरीके से सामने लाया जा सकता था। पीड़िता के माता-पिता ने स्पष्ट किया कि उनका उद्देश्य किसी राजनीतिक लाभ या चुनावी कदम नहीं है। पीड़िता की मां ने कहा कि उन्हें भाजपा और तृणमूल कांग्रेस दोनों से विधानसभा चुनाव लड़ने का प्रस्ताव आया, लेकिन उनका मकसद सिर्फ न्याय पाना है। परिवार ने केंद्र सरकार से भी मुलाकात की इच्छा जताई है और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मिलने की योजना बनाई है, ताकि अपनी चिंताओं और न्यायिक प्रक्रियाओं में सुधार की जरूरतों को सीधे उनसे साझा किया जा सके।

9 अगस्त 2024 को पीजी द्वितीय वर्ष की छात्रा के साथ आरजी कर मेडिकल कॉलेज परिसर में हुई यह घटना न केवल पश्चिम बंगाल में बल्कि पूरे देश में कानून और व्यवस्था पर गंभीर प्रश्न खड़े कर गई थी। विशेषज्ञों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं का कहना है कि इस तरह की घटनाओं में पीड़िता और उनके परिवार की सुरक्षा, न्याय और पारदर्शिता सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

अब परिवार की मांग है कि सीबीआई जांच पूरी तरह स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से हो, और कोर्ट में सुनवाई में पारदर्शिता सुनिश्चित की जाए। उनके अनुसार, न्याय मिलने तक कोई राजनीतिक कदम या अन्य दबाव उनकी प्राथमिकता नहीं है। यह मामला राज्य और केंद्र दोनों के लिए एक संवेदनशील चुनौती बन गया है, जो न्याय व्यवस्था की जवाबदेही और सामाजिक संवेदनशीलता की परीक्षा ले रहा है।

इस बीच राज्य सरकार और केंद्र सरकार पर दबाव बढ़ रहा है कि पीड़िता के परिवार को उचित सुरक्षा और कानूनी सहायता उपलब्ध कराई जाए, ताकि वे निर्भय होकर न्याय की मांग कर सकें और भविष्य में इस तरह की घटनाओं की रोकथाम सुनिश्चित की जा सके।

तेलंगाना में मानवता को शर्मसार करने वाली घटना, नागरकुर्नूल में आवारा कुत्तों की सामूहिक हत्या से हड़कंप

(जीएनएस)। नागरकुर्नूल। तेलंगाना के नागरकुर्नूल जिले से सामने आई आवारा कुत्तों की सामूहिक हत्या की घटना ने न केवल स्थानीय लोगों को झकझोर दिया है, बल्कि पूरे राज्य में प्रशासनिक संवेदनशीलता और पशु अधिकारों को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। थुम्मैपल्ली गांव में बीते करीब दस दिनों के भीतर सौ से अधिक आवारा कुत्तों को कथित रूप से जहरीले इंजेक्शन देकर मार दिए जाने का मामला सामने आने के बाद इलाके में आक्रोश और भय का माहौल है। इस अमानवीय कृत्य को लेकर पशु प्रेमी संगठनों के साथ-साथ आम ग्रामीणों ने भी गहरी नाराजगी जताई है।

मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। यह शिकायत स्ट्रे एनिमल फाउंडेशन ऑफ इंडिया से जुड़ी एनिमल क्रूरता रोकथाम सहायक मुदावथ प्रीति द्वारा चारपाका पुलिस थाने में दर्ज कराई गई है। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि गांव में सुनियोजित तरीके से आवारा कुत्तों को निशाना बनाया गया और यह सब किसी एक दिन की घटना नहीं, बल्कि लगातार कई दिनों तक चलाया गया अभियान था। बताया गया है कि गांव के अलग-अलग

हिस्सों में कुत्तों को पकड़कर उन्हें जहरीले इंजेक्शन दिए गए, जिससे उनकी तड़प-तड़प कर मौत हो गई। एफआईआर के मुताबिक, 27 जनवरी को इस घटना की पहली ठोस जानकारी सामने आई थी, जब स्थानीय लोगों ने बड़ी संख्या में कुत्तों के अचानक गायब होने और कुछ स्थानों पर मृत कुत्तों के पड़े होने की सूचना दी। इसके बाद जब पशु प्रेमी संगठनों ने पड़ताल शुरू की, तो मामला और भी भयावह नजर आया। आरोप है कि इस पूरी कार्रवाई को गांव के सरपंच और पंचायत सचिव के निर्देश पर अंजाम दिया गया। शिकायत में एक कथित ऑडियो रिकॉर्डिंग का भी जिक्र है, जिसमें सरपंच कथित तौर पर यह स्वीकार करते हुए सुने जा रहे हैं कि कुत्तों को इंजेक्शन देकर मारा गया और इसके लिए बाहर से 'डॉग किलर्स' बुलाए गए थे।

ऑडियो बातचीत के अनुसार, इन लोगों को करीब 18 हजार रुपये का भुगतान किया गया, ताकि गांव से आवारा कुत्तों को "खत्म" किया जा सके। इस बातचीत ने मामले को और गंभीर बना दिया है, क्योंकि इससे यह संकेत मिलता है कि यह घटना किसी आवेश या अचानक लिए गए फैसले का परिणाम नहीं, बल्कि सुनियोजित और संगठित तरीके से की गई कार्रवाई थी। पशु अधिकार कार्यकर्ताओं का कहना है कि यदि यह आरोप सही पाए जाते हैं, तो यह न केवल पशु क्रूरता निवारण अधिनियम का खुला उल्लंघन है, बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनप्रतिनिधियों की भूमिका पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न लगाता है।

जांच के दौरान यह भी सामने आया है कि मारे गए कुत्तों के शवों को छिपाने और सबूत मिटाने की कोशिशें की गईं। आरोप है कि ग्राम पंचायत कर्मचारी रवि ने मृत कुत्तों के शवों को उठाकर गांव से बाहर ले जाने में भूमिका निभाई। वहीं एक अन्य कथित बातचीत में गोपी नामक व्यक्ति ने यह स्वीकार किया है कि पिछले दस दिनों से लगातार कुत्तों को जहर दिया जा रहा था। सरपंच के कथित बयान में यह भी कहा गया है कि मृत कुत्तों के शवों को गांव से करीब दो किलोमीटर दूर ले जाकर फेंक दिया गया, ताकि गांव में कोई हलचल न हो और मामला दबा रहे।

इस घटना के सामने आने के बाद गांव में डर और असहजता का माहौल है। कई ग्रामीणों का कहना है कि आवारा कुत्तों से कुछ समस्याएं जरूर थीं, लेकिन इस तरह सामूहिक हत्या किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। लोगों का यह भी कहना है कि यदि समस्या थी, तो प्रशासनिक स्तर पर नसबंदी, टीकाकरण या पुनर्वास जैसे वैधानिक और मानवीय उपाय अपनाए जा सकते थे। इसके बजाय हिंसक और गैरकानूनी रास्ता अपनाना गांव की छवि और सामाजिक मूल्यों दोनों को नुकसान पहुंचाता है। पशु प्रेमी संगठनों ने इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। उनका कहना है कि यदि इस मामले में उदाहरणात्मक सजा नहीं दी गई, तो यह एक खतरनाक मिसाल बनेगी और अन्य जगहों पर भी इस तरह की घटनाओं को बढ़ावा मिल सकता है।

सम्मान, स्वास्थ्य और शिक्षा की नई इबारत : मासिक धर्म को मौलिक अधिकार मानकर सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक आदेश

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की करोड़ों छात्राओं के जीवन को सीधे प्रभावित करने वाला एक ऐतिहासिक और दूरगामी फैसला सुप्रीम कोर्ट ने सुनाया है, जिसने शिक्षा, स्वास्थ्य और महिला सम्मान को एक ही सूत्र में बांध दिया है। शीर्ष अदालत ने मासिक धर्म स्वास्थ्य को संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार का अभिन्न हिस्सा घोषित करते हुए साफ शब्दों में कहा है कि सुरक्षित और गरिमापूर्ण मासिक धर्म प्रबंधन के बिना किसी लड़की के लिए सम्मानजनक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। यह फैसला केवल एक कानूनी आदेश नहीं, बल्कि वर्षों से चुपचाप झेली जा रही सामाजिक उपेक्षा, असमानता और वर्जनाओं के खिलाफ एक मजबूत संवैधानिक हस्तक्षेप के रूप में देखा जा रहा है।

जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस आर महादेवन की पीठ ने अपने फैसले में यह स्पष्ट किया कि मासिक धर्म कोई निजी या हाशिए का विषय नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और मानवाधिकार से जुड़ा प्रश्न है। अदालत ने माना कि स्वच्छता, सुरक्षित उत्पादों और निजता के अभाव में मासिक धर्म केवल शारीरिक कष्ट तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह मानसिक तनाव, आत्मसम्मान की क्षति और शिक्षा से दूरी का कारण भी बनता है। इसी पृष्ठभूमि में अदालत ने देश के सभी सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूलों के लिए कक्षा 6 से 12 तक की छात्राओं को निशुल्क सैनिटरी नैपकिन उपलब्ध कराना अनिवार्य कर दिया है।

इस फैसले का सबसे सख्त और प्रभावी पहलू यह है कि अदालत ने स्पष्ट संकेत दिए हैं कि आदेश की अवहेलना करने वाले स्कूलों की मान्यता रद्द की जा सकती है। यानी अब यह कोई वैकल्पिक या

कल्याणकारी योजना नहीं, बल्कि कानूनी बाध्यता होगी। अदालत ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया है कि वे केंद्र सरकार की 'राष्ट्रीय मासिक धर्म स्वच्छता नीति' को तीन महीने के भीतर प्रभावी रूप से लागू करें। यह आदेश शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में समान रूप से लागू होगा, ताकि किसी भी लड़की को केवल भौगोलिक या आर्थिक कारणों से पीछे न रहना पड़े।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी रेखांकित किया कि मासिक धर्म से जुड़ी समस्याएं केवल सैनिटरी पैड की उपलब्धता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह स्कूल परिसरों के बुनियादी ढांचे से भी गहराई से जुड़ी हैं। अदालत ने आदेश दिया है कि हर स्कूल में छात्राओं और छात्रों के लिए अलग-अलग, स्वच्छ और सुरक्षित शौचालय होने चाहिए, जिनमें पानी और साबुन की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। अदालत ने माना कि बिना स्वच्छ शौचालयों के सैनिटरी उत्पाद देना अधूरा समाधान है, क्योंकि इससे छात्राओं की निजता और स्वास्थ्य दोनों प्रभावित होते हैं।

इसके साथ ही स्कूल परिसरों में 'मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन कॉर्नर' स्थापित करने का निर्देश दिया गया है। इन कॉर्नरों में केवल सैनिटरी पैड ही नहीं, बल्कि आपात स्थिति के लिए अतिरिक्त यूनिफॉर्म, अंडरवियर और अन्य आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध होनी चाहिए। अदालत ने यह स्वीकार किया कि मासिक धर्म के दौरान कपड़े खराब हो जाना या अचानक जरूरत पड़ना कई लड़कियों के लिए स्कूल छोड़ने या पूरे दिन असहज रहने का कारण बनता है। ऐसे में यह कॉर्नर छात्राओं के आत्मविश्वास और निरंतर स्कूल उपस्थिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी को भी अदालत ने इस फैसले में शामिल किया है। कोर्ट ने निर्देश दिया है कि स्कूलों में ऑक्सो-बायोडिग्रेडेबल या पर्यावरण के अनुकूल सैनिटरी नैपकिन उपलब्ध कराए जाएं, ताकि स्वास्थ्य के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का संतुलन भी बना रहे। शौचालयों के भीतर ही वेंडिंग मशीनें लगाने और उपयोग किए गए पैड के सुरक्षित निपटान के लिए ढके हुए कूड़ेदान और आधुनिक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली विकसित करने पर भी जोर दिया गया है। अदालत ने कहा कि निजता और गरिमा केवल शब्द नहीं, बल्कि व्यवहारिक व्यवस्थाओं से सुनिश्चित की जानी चाहिए।

अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे को संविधान के अनुच्छेद 14 से भी जोड़ा है, जो समानता के अधिकार की गारंटी देता है। अदालत ने कहा कि जब स्कूलों में उचित शौचालय, पानी, साबुन और सैनिटरी उत्पाद उपलब्ध नहीं होते, तो इसका सीधा असर लड़कियों की शिक्षा पर पड़ता है। कई छात्राएं मासिक धर्म के दिनों में स्कूल नहीं आ पातीं, कक्षाओं से अनुपस्थित रहती हैं या अंततः पढ़ाई ही छोड़ देती हैं। यह स्थिति उन्हें उनके पुरुष सहपाठियों के मुकाबले असमान स्थिति में खड़ा कर देती है, जो संविधान की मूल भावना के खिलाफ है।

अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि मासिक धर्म स्वास्थ्य केवल छात्राओं का विषय नहीं, बल्कि पूरे समाज की संवेदनशीलता का पैमाना है। फैसले में इस बात पर जोर दिया गया कि लड़कों और पुरुष शिक्षकों को भी मासिक धर्म से जुड़े वैज्ञानिक तथ्यों और मानवीय दृष्टिकोण के साथ शिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि शर्म, मजाक और भेदभाव की मानसिकता को खत्म किया जा सके। कोर्ट ने माना कि जब तक सामाजिक सोच नहीं बदलेगी, तब तक केवल बुनियादी सुविधाएं भी अधूरी साबित होंगी।

इस फैसले के क्रियान्वयन की निगरानी के लिए सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग और राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोगों को जिम्मेदारी सौंपी है। इन संस्थाओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि स्कूलों में आदेश का पालन हो रहा है या नहीं और कहीं लापरवाही पाए जाने पर समय रहते कार्रवाई की जाए। अदालत ने संकेत दिए हैं कि यह एक सतत प्रक्रिया होगी, न कि एक बार का औपचारिक अनुपालन।

विशेषज्ञों और सामाजिक संगठनों ने इस फैसले को भारत में महिला अधिकारों और बालिका शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर बताया है। उनका मानना है कि यह आदेश न केवल स्कूलों में छात्राओं की उपस्थिति और आत्मविश्वास बढ़ाएगा, बल्कि लंबे समय में बालिकाओं के ड्रॉपआउट रेट को भी कम करेगा। यह फैसला उन लाखों लड़कियों के लिए उम्मीद की किरण है, जो आज भी मासिक धर्म को लेकर चुप्पी, शर्म और असुविधा के बीच पढ़ाई करने को मजबूर हैं।

संपादकीय

आर्थिक सर्वेक्षण ने लचीलापन पर दिया जोर

देश में आम बजट से पहले सामने आने वाले आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 में वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था को लचीला व गतिशील बनाने पर बल दिया गया है। यह सर्वेक्षण उन चुनौतियों की ओर भी इशारा करता है, जिनके लिए सावधानीपूर्वक नीतिगत निर्णय लेने की आवश्यकता है। दुनिया में सबसे तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में चालू वित्तीय वर्ष में भारत के सकल घरेलू उत्पाद दर यानी जीडीपी के 7.4 रहने का भरोसा जताया गया है। वहीं आर्थिक सर्वेक्षण वित्तीय वर्ष 2026-27 में विकास वृद्धि दर के 6.8 से 7.2 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है। इस अनुमान में सीमापरक तनाव, व्यापार में व्यवधान और वैश्विक बाजारों में अस्थिरता को भी ध्यान में रखा गया है। निश्चित रूप से यह सावधानीपूर्वक दर्शाया गया आशावादी दृष्टिकोण घरेलू मांग, उपभोग और निवेश की मजबूती को ही दर्शाता है। इसके बावजूद कि तमाम बाहरी जोखिम विद्यमान हैं, मसलन टैरिफ को लेकर आपूर्ति श्रृंखला में तनाव व देश की अपेक्षाओं का संतुलन बनाना शामिल है। यह सार्थक है कि सर्वेक्षण यथार्थवाद को नजरअंदाज नहीं करता है, जो यह भी दर्शाता है कि वैश्विक आर्थिक व्यवस्था पूंजी प्रवाह व मुद्रा की ताकत से ही सफलता सुनिश्चित नहीं होती। यह भी हकीकत है कि एआई जैसी नई तकनीकों से होने वाले लाभ असमानता को ही बढ़ावा देते हैं। लेकिन इसके लिये भी सहायक मानव संसाधन और विनियामक ढांचे की जरूरत होती है। खासकर भारत जैसे देश में जहां श्रम शक्ति का बाहुल्य है। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि हम दुनिया में सबसे बड़ी युवा आबादी वाले देश होने का लाभ उठाएं। इसके लिये कौशल विकास को प्राथमिकता देने की सख्त जरूरत है, जिससे हम गुणवत्तापूर्ण स्वदेशी उत्पादों के जरिये विश्व में आर्थिक स्पर्धा का मुकाबला कर सकें। ये कदम हमारे निर्यात बढ़ाने में भी सहायक हो सकते हैं। कालांतर में ये हमारे व्यापार घाटे को कम करने में भी मददगार साबित हो सकता है।

इसमें दो राय नहीं है कि हालिया आर्थिक सर्वेक्षण के जरिये एक महत्वाकांक्षी रोड मैप बनाने का प्रयास किया गया है, जिसके अंतर्गत स्वदेशी अभियान को तरजीह देने से लेकर रणनीतिक लचीलेपन और रणनीतिक अनिवार्यता भारत की आर्थिक क्षमता की परीक्षा लेने वाला साबित हो सकता है। लेकिन इसके लिये जरूरी है कि भारत में उत्पादित वस्तुओं की साख को अंतर्राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप बनाया जाए। निस्संदेह, विश्व में भारतीय उत्पाद 'खरीदने के बारे में सोचने' से स्थिति को 'बिना सोचे भारतीय उत्पाद खरीदने' वाली सोच विकसित करना एक बड़ी चुनौती होगी। इस स्थिति के लिये हमें विनिर्माण क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्धता की सख्त जरूरत होगी। निस्संदेह, हाल ही में यूरोपीय संघ के साथ संपन्न हुए ऐतिहासिक समझौते को लेकर अर्थव्यवस्था में खासा उत्साह देखा जा रहा है, जिसके अर्थव्यवस्था में दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव की उम्मीद की जा रही है। वहीं दूसरी ओर लंबे समय से लटके हुए भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को लेकर अनिश्चितता लगातार बनी हुई है। सर्वेक्षण में इस बाबत कहा गया है कि इस वित्तीय वर्ष में इस एफटीए के सिरे चढ़ने की उम्मीद है। लेकिन यहां एक महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था का लाभ आम आदमी को कितना मिलता है। सवाल यह भी है कि दुनिया में सबसे तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था का लाभ आम आदमी के जीवन को बदलने में कितना मददगार होगा। एआई और तकनीक क्रांति के दौर में भारतीय विपुल श्रम शक्ति का बेहतर उपयोग कैसे हो सकता है। भारत दुनिया में सबसे युवा श्रम शक्ति वाला देश है तो क्या हम उनकी योग्यता व क्षमता के अनुरूप रोजगार देने में सक्षम होंगे, ताकि वे विकसित भारत के संकल्प में अपना योगदान दे सकें। जरूरत इस बात की है कि देश में बेरोजगारी की दर कम हो और युवाओं के विदेश पलायन की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिये पहल की जाए। वहीं दूसरी ओर फिसलन वाली जमीन पर चलते हुए सर्वेक्षण में दो दशक पुराने सूचना के अधिकार अधिनियम के प्रावधानों में बदलाव की मंशा जतायी गई है। निस्संदेह, ऐसे किसी बदलाव का आधार तार्किक होना चाहिए।

माखनलाल जी ने देखा था पत्रकारिता विश्वविद्यालय का सपना

> "माखनलाल जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे कवि, लेखक, पत्रकार, संपादक, स्वतंत्रता सेनानी अनेक भूमिकाओं में सामने आते हैं। वे अप्रतिम वक्ता भी थे। इसलिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उनके बारे में कहा-"हम सब लोग तो बात करते हैं, बोलना (भाषण) तो माखनलाल जी ही जानते हैं।"

जनसंचार और पत्रकारिता की शिक्षा आज एक विशिष्ट अनुशासन बन चुकी है। देश में पत्रकारिता और जनसंचार शिक्षा पर केंद्रित चार विश्वविद्यालय कार्यरत हैं, लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने ही सबसे पहले पत्रकारिता विद्यापीठ (विश्वविद्यालय) का सपना देखा था। उन्होंने भरतपुर (राजस्थान) में 1927 में आयोजित संपादक सम्मेलन में कहा था-"हिंदी समाचार पत्रों में कार्यालय में योग्य व्यक्तियों के प्रवेश कराने के लिए, एक पाठशाला आजकल के नए नामों की बाढ़ में से कोई शब्द चुनिए तो कहिए कि एक संपादन कला के विद्यापीठ की आवश्यकता है। ऐसी विद्यापीठ किसी योग्य स्थान पर बुद्धिमान, परिश्रमी, अनुभवी, संपादक-शिक्षकों द्वारा संचालित होना चाहिए। उक्त पीठ में अन्यान्य विषयों का एक प्रकांड ग्रंथ संग्रहालय होना चाहिए।" यह संयोग ही है कि उनके इस स्वप्न को 1990 में मध्यप्रदेश सरकार ने साकार करते हुए उनके नाम पर ही भोपाल में पत्रकारिता विश्वविद्यालय की स्थापना की। बाद के दिनों में रायपुर में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय और जयपुर में हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इसके साथ ही दो साल पूर्व भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी) को भी डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा मिल चुका है। यह बात बताती है कि हमारे पुरखे किस तरह अपनी विधा को अकादमिक रुप से स्थापित होते देखना चाहते थे। माखनलाल जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे कवि, लेखक, पत्रकार, संपादक, स्वतंत्रता सेनानी अनेक भूमिकाओं में सामने आते हैं। वे अप्रतिम वक्ता भी थे। इसलिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उनके बारे में कहा-"हम सब लोग तो बात करते हैं, बोलना (भाषण) तो माखनलाल जी ही जानते हैं।" इतना ही नहीं राष्ट्रपिता ने कहा- "मैं बाबई जैसे छोटे स्थान पर इसलिए जा रहा हूं क्योंकि वह माखनलालजी का जन्मस्थान है। जिस भूमि ने माखनलालजी को जन्म दिया, उसी भूमि को मैं सम्मान देना चाहता हूं।" यह संयोग ही है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और माखनलाल जी पुण्यतिथि एक ही दिन 30 जनवरी को मनाई जाती है। चर्चित शायर श्री फिराक गोरखपुरी भी माखनलाल जी कलम के प्रशंसक थे। उनका कहना था कि-"उनके लेखों को पढ़ने से ऐसा मालूम होता था कि आदि-शक्ति शब्दों के रूप में अवतरित हो रही है या गंगा स्वर्ग से उतर रही है। यह शैली हिंदी में ही नहीं, भारत की दूसरी भाषाओं में भी विरले ही लोगों को नसीब हुई है। मुझ जैसे हजारों लोंगो ने अपनी भाषा और लिखने की कला माखनलाल जी से ही सीखी।" इसे भी पढ़ें: भरोसे एवं भारत की आवाज थे विरल पत्रकार मार्क टुली पं. माखनलाल चतुर्वेदी के संपादन में निकला 'कर्मवीर' एक ऐसा पत्र है, जिसकी धमक हम आज भी महसूस करते हैं। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में 'कर्मवीर' एक ऐसा नाम है, जिसे छोड़कर भारतीय पत्रकारिता का समग्र मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। इसी तरह उसके संपादक पं. माखनलाल चतुर्वेदी और उनकी संपूर्ण जीवनयात्रा, आत्मसमर्पण के खिलाफ लड़ने वाले संपादक की यात्रा है। वस्तुतः वे एक साथ कई मोर्चों पर लड़ रहे थे और कोई मोर्चा ऐसा न था, जहां उन्होंने अपनी छाप न छोड़ी हो। सही मायने में 'कर्मवीर' के संपादक ने अपने पत्र के नाम को सार्थक किया और माखनलाल जी स्वयं कर्मवीर बन गए। 4 अप्रैल, 1889 को होशंगाबाद (मप्र) के बाबई जिले में जन्में माखनलालजी ने जब पत्रकारिता शुरू की तो सारे देश में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव देखा जा रहा था। राष्ट्रीयता एवं समाज सुधार की चर्चाएं और फिरंगियों को देश बदर करने की भावनाएं बलवती थीं। इसी के साथ महात्मा गांधी जैसी तेजस्वी विभूति के आगमन ने सारे आंदोलन को एक नई ऊर्जा से भर दिया। दादा माखनलाल जी भी उन्हीं गांधी भक्तों की टोली में शामिल हो गए। गांधी के जीवन दर्शन से अनुप्राणित दादा ने रचना और कर्म के स्तर पर जिस तेजी के साथ राष्ट्रीय आंदोलन को ऊर्जा एवं गति दी वह महत्व का विषय है। इस दौर की पत्रकारिता भी कमोबेश गांधी के विचारों से खासी प्रभावित थी। हिंदी पत्रकारिता का वह जमाना ही अजीब था। आम कहावत थी – "जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।" और सच में अखबार की ताकत का अहसास आजादी के दीवानों को हो गया था। इसी के चलते स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े नेताओं ने अपने पत्र निकाले। जिनके माध्यम से ऐसी जनचेतना पैदा की कि भारत आजादी की सांस ले सका। वस्तुतः इस दौर में अखबारों का इस्तेमाल एक अस्त्र के रूप में हो रहा था। माखनलाल जी ने 1913 में 'प्रभा' नाम की एक उच्चकोटि की पत्रिका के माध्यम से साहित्यिक पत्रकारिता में भी सार्थक हस्तक्षेप किया। लोगों को झकझोरने एवं जगानेवाली रचनाओं के प्रकाशन के माध्यम से 'प्रभा' हिंदी जगत का एक जरूरी नाम बन गयी। दादा की 56 सालों की ओजपूर्ण पत्रकारिता की यात्रा में प्रताप, प्रभा व कर्मवीर उनके विभिन्न पड़ाव रहे। साथ ही उनकी राजनीतिक वरीयता भी बहुत उंची थी। वे बड़े कवि थे, पत्रकार थे पर उनके इन रूपों पर राजनीति कभी हावी न हो पायी। इतना ही नहीं जब प्राथमिकताओं की बात आयी तो मप्र कांग्रेस का वरिष्टतम नेता होने के बावजूद उन्होंने सत्ता में पद लेने के बजाए मां सरस्वती की साधना को ही प्राथमिकता दी। आजादी के बाद 30 अप्रैल, 1968 तक वे जीवित रहे पर सत्ता का लोभ उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाया। इतना ही नहीं 1967 में भारतीय संसद द्वारा राजभाषा विधेयक पारित होने के बाद उन्होंने राष्ट्रपति को वह पद्मभूषण का अलंकरण भी लौटा दिया जो उन्हें 1963 में दिया गया था। वे समझौतों के खिलाफ लोगों में चेतना जगाते रहे। उन्होंने लिखा है-

अमर राष्ट्र, उदंड राष्ट्र, उन्मुक्त राष्ट्र, यह मेरी बोली
यह सुधार-समझौतों वाली मुझको भाती नहीं ठिठोली।

'कर्मवीर' के संपादक कैसे संपादक थे, इसे बताने के लिए उन्होंने कहा कि – "हम फक्कड़ सपनों के स्वर्गों को लुटाने निकले हैं। किसी की फरमाइश पर जूते बनानेवाले चर्मकार नहीं हैं हम ।" यह निर्भीकता ही उनकी पत्रकारिता की भावभूमि का निर्माण करती थी। स्वाधीनता आंदोलन की आँच को तेज करने में उनका कर्मवीर अग्रणी बना। कम ही लोग जानते होंगें कि दादा को इसकी कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। उनके संपादकीय कार्यालय यानी घर पर तिरसठ बार छापे पड़े, तलाशियां हुयीं। 12 बार वे जेल गए। कर्मवीर को अर्थाभाव में कई बार बंद होना पड़ा। लेखक से लेकर प्रूफ रीडर तक सबका कार्य वे स्वयं कर लेते थे। पत्रकारिता उनके लिए राष्ट्रसेवा और समाज के जागरण का ही एक माध्यम थी। भरतपुर के संपादक सम्मेलन में वे पत्रकारिता जगत का आह्वान करते हुए कहते हैं-"यदि समाचार पत्र संसार की एक बड़ी ताकत है तो उसके सिर जोखिम भी कम नहीं है। पर्वत की जो शिखरें हिम से चमकती हैं और राष्ट्रीय रक्षा की महान दीवार बनती हैं, उन्हें ऊंची होना पड़ता है। जगत में समाचार पत्र यदि बड़प्पन पाए हुए हैं, तो उनकी जिम्मेदारी भी भारी है।बिना जिम्मेदारी के बड़प्पन का मूल्य ही क्या है? "

प्रेरणा

शोर के बीच स्थिर मन: एकाग्रता की अदृश्य

मनुष्य का सबसे बड़ा संघर्ष बाहरी दुनिया से नहीं, बल्कि अपने ही मन से होता है। आज का समय तेज़ है, प्रतिस्पर्धी है और सूचनाओं से भरा हुआ है। हर क्षण कुछ न कुछ हमारा ध्यान खींचने की कोशिश करता है। मोबाइल की घंटी, सोशल मीडिया की सूचनाएँ, काम का दबाव, भविष्य की चिंता और अतीत की स्मृतियाँ—इन सबके बीच मन का एक जगह टिक पाना कठिन होता जा रहा है। ऐसे समय में एकाग्रता केवल सफलता का साधन नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन और आंतरिक शांति की अनिवार्य शर्त बन गई है।

इंग्लैंड के प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक लॉर्ड मोनवर्न का प्रसंग इसी सत्य को गहराई से उजागर करता है। वे अपने समय के ऐसे चिकित्सक थे जो अत्यधिक भीड़-भाड़ और शोरगुल के बीच भी जटिल से जटिल ऑपरेशन पूरी सफलता के साथ कर लेते थे। जब एक जिज्ञासु ने उनसे पूछा कि इतनी अव्यवस्था में वे अपना ध्यान कैसे केंद्रित रख पाते हैं, तो उनका उत्तर अत्यंत सरल, किंतु अर्थ में अत्यंत व्यापक था। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन करते समय उनके साथ केवल तीन की उपस्थिति होती है—वे स्वयं, रोगी और उनका भगवान। इस कथन में एकाग्रता का वह सूत्र छिपा है, जो जीवन के हर क्षेत्र में समान रूप से लागू होता है।

एकाग्रता का अर्थ केवल किसी वस्तु को घूरते रहना नहीं है। यह मन की वह अवस्था है जिसमें चेतना पूरी तरह वर्तमान क्षण में स्थापित हो जाती है। जब मन वर्तमान में होता है, तब न तो अतीत की पछतावे की पीड़ा उसे विचलित करती है और न ही भविष्य की आशंकाएँ उसे डराती हैं। लॉर्ड मोनवर्न के लिए ऑपरेशन का क्षण पूर्ण उपस्थिति का क्षण था। उस समय उनके लिए न प्रशंसा का महत्व था, न आलोचना का भय। उनका संपूर्ण अस्तित्व उस एक कार्य में समर्पित हो जाता था।

आज के जीवन में सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम शारीरिक रूप से एक जगह होते हैं, लेकिन मानसिक रूप से कई जगह भटक रहे होते हैं। हम पढ़ते समय भविष्य की योजनाएँ सोचते हैं, काम करते समय मोबाइल देखते हैं और परिवार के साथ होते हुए भी मन कहीं और भटका रहता है। यह विभाजित ध्यान धीरे-धीरे हमारी कार्यक्षमता को कम कर देता है। एकाग्रता हमें यह सिखाती है कि एक समय में एक ही कार्य को पूरी निष्ठा और सजगता के साथ किया जाए। यही सिद्धांत लॉर्ड मोनवर्न के जीवन में दिखाई देता है।

उनके कथन में "भगवान" शब्द विशेष महत्व रखता है। यहाँ भगवान किसी धार्मिक सीमारेखा में बंधा हुआ नहीं है, बल्कि वह आस्था, उत्तरदायित्व और विनम्रता का प्रतीक है। जब व्यक्ति यह मान लेता है कि वह किसी बड़े उद्देश्य या उच्च चेतना के सामने उत्तरदायी है, तब उसका अहंकार स्वतः कम होने लगता है। अहंकार के कम होते ही मन हल्का हो जाता है और एकाग्रता सहज रूप से गहरी होने लगती है। चिकित्सक के लिए रोगी केवल एक केस नहीं था, बल्कि एक जीवन था, और इसी भावना ने उनके ध्यान को अडिग बनाए रखा।

एकाग्रता का सीधा संबंध भय से भी है। भय मन को भविष्य में ले जाता है—गलती का भय, असफलता का भय, परिणाम का भय। जब मन भय से ग्रस्त होता है, तब वह वर्तमान क्षण में पूरी तरह टिक नहीं पाता। लॉर्ड मोनवर्न की एकाग्रता इसलिए भी अटूट थी क्योंकि वे भय से मुक्त होकर अपने कर्तव्य में लीन रहते थे। उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना सीख लिया था और परिणाम को ईश्वर या प्रकृति पर छोड़ दिया था। यह भाव मन को तनाव से मुक्त करता है और कार्य को सहज बना देता है।

यह धारणा कि शांति केवल अनुकूल परिस्थितियों में ही संभव है, पूरी तरह भ्रम है। वास्तव में शांति भीतर की अवस्था है, परिस्थितियों की नहीं। जब भीतर शांति होती है, तब बाहर की अव्यवस्था भी हमें विचलित नहीं कर पाती। ऑपरेशन थिएटर की भीड़ और शोर लॉर्ड मोनवर्न के लिए बाधा नहीं थे, क्योंकि उनके भीतर एक मौन था। यही आंतरिक मौन एकाग्रता की भूमि है, जहाँ से सटीक निर्णय, स्थिर हाथ और स्पष्ट दृष्टि उत्पन्न होती है।

एकाग्रता को विकसित करना कोई एक दिन का कार्य नहीं है। यह निरंतर अभ्यास और अनुशासन से आती है। सबसे पहला अभ्यास है—स्पष्टता। हमें स्वयं से यह स्पष्ट करना होता है कि इस क्षण हमारा मुख्य कार्य क्या है। दूसरा अभ्यास है—मन की सजगता। जब मन भटकने लगे, तो उसे कठोरता से नहीं, बल्कि कोमलता से वापस वर्तमान में लाना चाहिए। श्वास पर ध्यान, कुछ क्षण का मौन या कार्य की गहराई को समझने का प्रयास इसमें सहायक होता है। तीसरा अभ्यास है—आस्था। जब हम अपने प्रयास पर विश्वास रखते हैं और परिणाम को लेकर अत्यधिक चिंता नहीं करते, तब मन अधिक स्थिर रहता है।

एकाग्रता केवल बड़े कार्यों में ही नहीं, बल्कि दैनिक जीवन की छोटी-छोटी क्रियाओं में भी महत्वपूर्ण है। भोजन करते समय यदि हम सचेत हों, तो स्वास्थ्य बेहतर होता है। बातचीत करते समय यदि हम पूरी तरह उपस्थित हों, तो संबंध गहरे होते हैं। पढ़ते या लिखते समय यदि मन एकाग्र हो, तो समझ और रचनात्मकता दोनों बढ़ती हैं। जीवन की गुणवत्ता सीधे-सीधे हमारे ध्यान की गुणवत्ता से जुड़ी हुई है।

अंततः, एकाग्रता मन पर लगाया गया कोई बोझ नहीं है, बल्कि मन को मुक्त करने की प्रक्रिया है। यह हमें अनावश्यक विचारों के शोर से बाहर निकालती है और वर्तमान क्षण की शांति से जोड़ती है। लॉर्ड मोनवर्न की सीख हमें यह बताती है कि यदि हम अपने कार्य को ईमानदारी, संवेदनशीलता और उच्च उद्देश्य के साथ करें, तो भीड़, शोर और दबाव भी हमें डिगा नहीं सकते। जब मन स्थिर होता है, तब साधारण मनुष्य भी असाधारण कार्य कर सकता है। यही एकाग्रता की अदृश्य, लेकिन असीम शक्ति है।

पारिस्थितिकी को नुकसान की जवाबदेही तय हो

नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान के बफर जोन के अंतर्गत आने वाली फूलों की घाटी देश-दुनिया में मशहूर है। उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर है। धरती का स्वर्ग कहा जाने वाला यह बायोस्फीयर रिजर्व, हिम तेंदुआ और हिमालयी भालू और ब्रह्मकमल आदि जैसी असंख्य दुर्लभ प्रजातियों के लिए विख्यात है। हर साल हजारों पर्यटक कुदरत की खूबसूरती देखने यहां आते हैं। लेकिन यह बेहद संवेदनशील जगह बीती नौ जनवरी से लगी आग से लगातार धधक रही है।

फूलों की घाटी में सबसे पहले पेनावडी और भ्यूंडार रेंज की पहाड़ियों पर आग लगी थी। समस्या यह है कि अलकनंदा और लक्ष्मण गंगा नदियों के बीच स्थित ऊंची चट्टानों, पेड़-पत्थर गिरने और जलते पेड़ों के चलते यहां राहत व वनकर्मियों का आग बुझाने के लिए पहुंचना बेहद मुश्किल साबित हो रहा है। यहां न सड़क है और न पैदल रास्ता। एसडीआरएफपी भी मौके पर नहीं पहुंच पा रही। वहीं अत्याधुनिक उपकरणों व संसाधनों का अभाव है। सूखी झाड़ियां,पत्तियां, सूखे पेड़ भी आग को फैला रहे हैं। जंगलों में धुंए का गुब्बार और लपटें दिखाई देती हैं। आग नंदा देवी पार्क के नीचे के इलाके में हरे पेड़ों तक पहुंच गयी है। जबकि प्रशासन का दावा है कि फूलों की घाटी क्षेत्र के गोविंद गढ़ रेंज में, बद्रीनाथ की निजमुला घाटी व गौणा गांव के जंगलों में लगी आग पर आंशिक रूप में काबू पाया है। लेकिन अभी 15 हैक्टेयर से ज्यादा इलाका धधक रहा है। हकीकत यह है कि नीचे की ओर लगी आग बुझाने में तो वनकर्मी जुटे हुए हैं लेकिन दुर्गम इलाके में खड़ी चट्टानों पर लगी आग पर काबू पाने में प्रशासन खुद को असमर्थ पा रहा है। चिंताजनक यह भी कि फायर सीजन से पहले ही यानी सर्दियों के मौसम में उत्तराखंड के जंगल धधक रहे हैं। जबकि अभी न बारिश है और न ही बर्फबारी हुई। ऐसे में अप्रैल- मई में जब तापमान 35-40 से ऊपर पहुंचेगा, तब क्या होगा? इन हालात से उत्तराखंड के गढ़वाल और कुमाऊं दोनों अंचल अछूते नहीं। उत्तरकाशी में वरणावत के पहाड़ी क्षेत्र, दशोली के निजमुला घाटी, पेनखंडा, पौड़ी के जामणाखाल, लाता, मैंग्यूल और कुमाऊं के अल्मोड़ा में हवालवडा,नहला और पाटलीबगड के जंगल कई दिनों से धधक रहे हैं, उनपर भी अंकुश नहीं लग सका है। हवा के साथ आग और फैल रही है। जबकि मौसम विभाग की मानें तो अगले 10 दिनों तक बारिश की कोई संभावना नहीं।

वह बात दीगर है कि राहत कार्य में मदद के लिए वायु सेना के एमआई 16 हेलीकॉप्टर बांबी बकेट आपरेशन के लिए जोशीमठ में तैनात हैं। लेकिन उनका उपयोग प्रशासन हवाई सर्वे और आग की तीव्रता व भयावहता के आकलन के अलावा आपदा प्रबंधन के बीच समन्वय के बाद ही कर सकेगा। वायु सेना और वन विभाग बांबी बकेट आपरेशन के मुद्दे पर सोशल मीडिया में वायरल एक वीडियो के मामले में बहस में उलझे हुए हैं। वायु सेना आग बुझाने में टिहरी-श्रीनगर डैम से पानी लाने में दिक्कत, पानी के स्रोत पास में नहीं होने और लॉजिस्टिक्स में मुश्किलों की बात कर रही है।

विचारणीय यह है कि वन विभाग केवल इतना कह रहा है कि जंगल की आग में सूखे पेड़ों के गिरने की वजह से बढ़ोतरी हुई है। वह यह बताने में नाकाम है कि आग कैसे लगी,किसने लगायी,असामाजिक तत्वों का तो इसमें हाथ नहीं है या फिर शार्टसर्किट से लगी या फिर चरवाहों ने लगायी। दरअसल जंगल की आग में बढ़ोतरी में लापरवाही की अहम भूमिका है। यदि वह समय रहते विभाग सक्रिय हुआ होता तो इतना नुकसान नहीं होता। गौरतलब है कि इस आग में करोड़ों की लकड़ी ही नहीं जली है, लाखों औषधीय पेड़-पौधे, पक्षी, वनस्पति, वन्य-जीवों के आवास, पारिस्थितिकीय तंत्र स्वाह हुआ है। डीएफओ चेतना कांडपाल भी इसे स्वीकारती हैं। सवाल है कि इस आग के लिए कौन जिम्मेदार है। क्या हर साल की तरह इस आग का मुद्दा भी फाइलों में दफन हो जायेगा। पहाड़ों पर आग लगने की घटनाएं तो हर साल होती हैं। क्या हमने उनसे कोई सबक सीखा है? पर्यावरण संरक्षण की बात करने वाली सरकारें हकीकत में पर्यावरण संरक्षण के प्रति गंभीर होनी चाहिए।

इस लापरवाही के लिए जवाबदेह तंत्र यह क्यों नहीं सोचता कि पहाड़ नहीं रहेंगे, वन संपदा इसी तरह आग की समिधा बनती रहेगी, तो ग्लेशियर खत्म हो जायेंगे, उस दशा में नदियां व अन्य जलस्रोत सूख जायेंगे और हम पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसेंगे। तब क्या होगा? इस बारे में आमजन को भी सोचना होगा कि पहाड़ रहेंगे, वनस्पति रहेगी, हरियाली रहेगी तो पर्यावरण सुरक्षित रहेगा। पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तो हमारा जीवन सुरक्षित रहेगा। जिस तरह जलवायु परिवर्तन हमें चेतावनी दे रहा है, उसे देखते हुए हमें भी सावधानी बरतनी होगी। देवभूमि उत्तराखंड के जंगल बचाने की जिम्मेवारी हम सबकी है। अरावली प्रकरण एक चेतावनी है कि अब भी समय है, संभल जाओ।

अभियान

महादेव के चरणों में जीवन: शुक्र प्रदोष व्रत की भक्ति से खुलता कृपा का द्वार

सनातन परंपरा में भक्ति केवल पूजा-पाठ का नाम नहीं है, भक्ति वह भाव है जिसमें मनुष्य अपने अहंकार, भय और इच्छाओं को त्यागकर ईश्वर के चरणों में समर्पित हो जाता है। जब यह समर्पण सच्चा होता है, तब जीवन की दिशा अपने आप बदलने लगती है। शुक्र प्रदोष व्रत ऐसा ही एक पावन अवसर है, जो भक्त को भगवान शिव के अत्यंत निकट ले जाता है। यह व्रत केवल एक तिथि नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन का क्षण है।

प्रदोष व्रत का संबंध भगवान शिव से है, जो करुणा, वैराग्य और कल्याण के प्रतीक हैं। जब यह व्रत शुक्रवार को पड़ता है, तब इसका महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि शुक्रवार शुक्र ग्रह और देवी शक्ति का दिन माना जाता है। इस प्रकार शुक्र प्रदोष व्रत शिव और शक्ति, वैराग्य और सौंदर्य, त्याग और सुख—इन सबका दिव्य संतुलन प्रस्तुत करता है। यह संतुलन ही जीवन का वास्तविक सौंदर्य है।

शास्त्रों में कहा गया है कि प्रदोष काल में भगवान शिव अत्यंत प्रसन्न और कृपालु होते हैं। सूर्यास्त के बाद का यह समय दिन और रात के संधि का प्रतीक है। यह वह क्षण है जब सृष्टि की गति कुछ देर के लिए थमती-सी प्रतीत होती है और चेतना भीतर की ओर मुड़ने लगती है। मान्यता है कि इस काल में महादेव स्वयं पृथ्वी लोक में भ्रमण करते हैं और अपने भक्तों की पुकार सुनते हैं। जो भक्त इस समय दीप जलाकर, शांत मन से शिव का स्मरण करता है, उसकी प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती।

शुक्र प्रदोष व्रत का मूल भाव है—श्रद्धा। यह श्रद्धा किसी डर से नहीं, बल्कि प्रेम से उत्पन्न होती है। शिव को भोलेनाथ कहा जाता है, क्योंकि वे भाव के भूखे हैं। उन्हें भव्य भोग, सोना-चाँदी या आडंबर नहीं चाहिए। उन्हें चाहिए तो केवल भक्त का निर्मल हृदय। इसी कारण साधारण-सा बेर, थोड़ा-सा जल और एक दीपक भी उन्हें प्रसन्न कर देता है, यदि उसमें सच्ची भक्ति समाई हो।

शुक्रवार और भगवान शिव, दोनों का संबंध शांति और सौम्यता से है। इस दिन सफेद रंग की वस्तुओं का विशेष महत्व बताया गया है। सफेद रंग मन की निर्मलता और आत्मा की शुद्धता का प्रतीक है। शुक्र प्रदोष व्रत के दिन मिश्री, बर्फी या रसगुल्ले का भोग अर्पित करना शुभ माना जाता है। यह मिठास केवल स्वाद की नहीं होती, यह जीवन में मधुरता की कामना का प्रतीक होती है। भक्त जब शिव को मीठा भोग अर्पित करता है, तो वह यह प्रार्थना करता है कि उसके जीवन की कड़वाहट, कलह और पीड़ा दूर हो जाए।

शिव को केसर खीर का भोग भी अत्यंत प्रिय माना गया है। दूध पवित्रता और शांति का प्रतीक है, जबकि केसर शुभता, ऐश्वर्य और दिव्यता का संकेत देता है। जब भक्त श्रद्धा से केसर युक्त खीर महादेव को अर्पित करता है, तो वह अपने जीवन में शुद्ध विचार, स्थिर मन और सकारात्मक ऊर्जा की कामना करता है। ऐसी मान्यता है कि इस भोग से भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होते हैं। विशेष रूप से अविवाहित कन्याओं के लिए यह भोग अत्यंत फलदायी माना गया है, क्योंकि इससे विवाह संबंधी बाधाएँ दूर होती हैं और योग्य जीवनसाथी का योग बनता है।

शिव भक्ति में पंचामृत का विशेष स्थान है। पंचामृत केवल पाँच पदार्थों का मिश्रण नहीं, बल्कि जीवन के पाँच मूल तत्वों का प्रतीक है। दूध मन की शांति और शुद्धता का प्रतीक है। दही समृद्धि और वंश वृद्धि का संकेत देता है। घी शक्ति, तेज और विजय का द्योतक है। शहद प्रेम, मधुर वाणी और आपसी सामंजस्य का प्रतीक है। शक्कर जीवन में सुख और संतोष का भाव जगाती है। जब भक्त पंचामृत शिव को अर्पित करता है, तो वह अपने संपूर्ण जीवन को शिव के चरणों में समर्पित कर देता है और प्रार्थना करता है कि उसका जीवन संतुलित और सुखमय बना रहे।

प्रदोष व्रत में बेर अर्पित करने की परंपरा भी अत्यंत भावपूर्ण है। बेर एक साधारण फल है, लेकिन शिव को अत्यंत प्रिय है। इसका कारण यह है कि बेर सादगी और विनम्रता का प्रतीक है। जब भक्त बेर चढ़ाता है, तो वह यह दर्शाता है कि वह अपने अहंकार, दिखावे और घमंड को त्यागकर सरल भाव से शिव की शरण में आया है। कहा जाता है कि बेर अर्पित करने से भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होते हैं और भक्त की मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। विशेषकर आर्थिक कष्ट, मानसिक तनाव और जीवन की रुकावटों से मुक्ति के लिए यह उपाय अत्यंत प्रभावी माना गया है।

शुक्र प्रदोष व्रत केवल बाहरी पूजा का पर्व नहीं है, बल्कि यह आत्मशुद्धि का दिन भी है। इस दिन मन, वाणी और कर्म—तीनों को शुद्ध रखने का विशेष महत्व है। वाणी में मधुरता, मन में करुणा और कर्म में संयम रखना शिव भक्ति का वास्तविक रूप है। शिव वही भक्त प्रिय है, जो दूसरों के दुःख को समझे और किसी का अहित न करे।

इस व्रत में संध्या के समय दीपक जलाकर "ॐ नमः शिवाय" का जप करना अत्यंत पुण्यकारी माना गया है। यह मंत्र केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि आत्मा की गूंज है। जब यह मंत्र श्रद्धा और विश्वास के साथ जपा जाता है, तो मन की अशांति धीरे-धीरे शांत होने लगती है। कहा जाता है कि प्रदोष काल में किया गया मंत्र जप सामान्य समय की अपेक्षा कई गुना अधिक फल देता है, क्योंकि उस समय स्वयं महादेव की उपस्थिति मानी जाती है।

शुक्र प्रदोष व्रत का प्रभाव विशेष रूप से वैवाहिक जीवन पर देखा जाता है। शिव और पार्वती को आदर्श दंपति माना गया है। उनकी आराधना करने से पति-पत्नी के बीच प्रेम, विश्वास और समझ बढ़ती है। जिन दंपतियों के जीवन में कलह या दूरी है, उनके लिए यह व्रत नई ऊर्जा और मधुरता का संचार करता है। वहीं जिनकी कुंडली में शुक्र कमजोर होता है, उनके लिए यह व्रत शुक्र दोष को शांत करने का आध्यात्मिक उपाय माना जाता है। भक्ति का वास्तविक अर्थ मांगना नहीं, बल्कि समर्पण है। जब भक्त शिव से यह कहता है कि "हे महादेव, जो मेरे लिए उचित हो वही दीजिए," तभी शिव की कृपा पूर्ण रूप से बरसती है। शुक्र प्रदोष व्रत हमें यही सिखाता है कि जब हम स्वयं को ईश्वर को सौंप देते हैं, तब जीवन का भार हल्का हो जाता है।

अंततः शुक्र प्रदोष व्रत आशा, विश्वास और श्रद्धा का पर्व है। यह हमें याद दिलाता है कि जीवन चाहे कितना ही कठिन क्यों न हो, शिव की शरण में आने वाला कभी अकेला नहीं होता। जब महादेव का हाथ सिर पर होता है, तो राह अपने आप आसान हो जाती है और अंधकार में भी प्रकाश दिखाई देने लगता है।

इस पावन व्रत को केवल परंपरा न मानें, बल्कि इसे अपने भीतर शिव को जाग्रत करने का अवसर समझें। सच्चे मन से की गई थोड़ी-सी भक्ति भी महादेव की अनंत कृपा का कारण बन सकती है। जब शिव प्रसन्न होते हैं, तो जीवन में शांति, सुख और सफलता स्वयं चलकर आती है। यही शुक्र प्रदोष व्रत की सच्ची भक्ति और उसका दिव्य फल है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

दिल्ली से अलवर तक रफ्तार की नई लकीर, 164 किलोमीटर में 'नमो भारत' बदलेगी सफर की तस्वीर

(जीएनएस)। नई दिल्ली/अलवर। राजस्थान और दिल्ली-एनसीआर के बीच आवागमन को नई गति देने वाली नमो भारत रैपिड रेल ट्रांजिट सिस्टम परियोजना को लेकर बड़ी और ऐतिहासिक पहल सामने आई है। केंद्र सरकार ने अलवर से दिल्ली को जोड़ने वाली इस महत्वाकांक्षी योजना के पहले चरण को मंजूरी दे दी है। लगभग 37 हजार करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली यह परियोजना न केवल यात्रा को तेज और सुगम बनाएगी, बल्कि पूरे क्षेत्र के आर्थिक, औद्योगिक और सामाजिक विकास में भी अहम भूमिका निभाएगी। लंबे समय से जिस रैपिड रेल कॉरिडोर का इंतजार किया जा रहा था, अब उसके जल्द जमीन पर उतरने की उम्मीद मजबूत हो गई है। अलवर से दिल्ली के बीच प्रस्तावित नमो भारत रैपिड रेल कॉरिडोर की कुल लंबाई करीब 164 किलोमीटर होगी। इस पूरे रूट पर 22 स्टेशन प्रस्तावित किए गए हैं, जिनमें से पांच स्टेशन भूमिगत होंगे। यह कॉरिडोर दिल्ली के सराय काले खां से शुरू होकर मानेसर, धारूहेड़ा, बावल, रेवाड़ी होते हुए अलवर तक जाएगा। पहले चरण में रैपिड रेल सराय काले खां से धारूहेड़ा होते हुए बावल तक चलाई जाएगी। शुरुआत में यह योजना केवल धारूहेड़ा तक सीमित थी, लेकिन हरियाणा सरकार के अनुरोध और क्षेत्र की जरूरतों को देखते हुए इसे बावल तक विस्तार देने पर सहमति बनी और केंद्र सरकार ने इसे मंजूरी दी।

बावल में टर्मिनल स्टेशन बनाए जाने से आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों और तेजी से विकसित हो रहे रिहायशी इलाकों को सीधा लाभ मिलेगा। यह इलाका पहले से ही ऑटोमोबाइल, मैन्युफैक्चरिंग और लॉजिस्टिक्स से जुड़े उद्योगों का बड़ा केंद्र है। रैपिड रेल कनेक्टिविटी मिलने के बाद यहां निवेश बढ़ने, नए उद्योग आने और रोजगार के अवसर पैदा होने की संभावना है। इसके साथ ही अलवर, रेवाड़ी और मानेसर जैसे शहरों का सीधा और तेज कनेक्शन दिल्ली से जुड़ जाएगा, जिससे रोजाना सफर करने वालों को बड़ी राहत मिलेगी। वर्तमान में अलवर से दिल्ली तक सड़क मार्ग या सामान्य रेल से यात्रा करने में कई घंटे लग जाते हैं। ट्रैफिक जाम, बसों और ट्रेनों की भीड़ यात्रियों की आम समस्या है। नमो भारत रैपिड रेल के शुरू होने के बाद यह दूरी काफी कम समय में तय की जा सकेगी। इससे नौकरीपेशा लोग, छात्र, व्यापारी और पर्यटक सभी लाभान्वित होंगे। खासकर वे लोग जो रोजाना दिल्ली-एनसीआर में काम करने के लिए अलवर, रेवाड़ी या आसपास के क्षेत्रों से आते-जाते हैं, उनके जीवन में बड़ा बदलाव आएगा।

सरकार की मंशा इस परियोजना के जरिए केवल यातायात सुविधा बढ़ाने की नहीं है, बल्कि दिल्ली-एनसीआर और राजस्थान के बीच संतुलित औद्योगिक विकास को भी बढ़ावा देना है। रैपिड रेल कॉरिडोर के आसपास नए टाउनशिप, व्यावसायिक केंद्र और औद्योगिक क्लस्टर विकसित होने की उम्मीद है। इससे जमीन और संपत्ति के मूल्यों में वृद्धि होगी और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। पर्यटन की दृष्टि से भी अलवर और उसके आसपास के ऐतिहासिक और प्राकृतिक स्थलों तक पहुंच आसान होगी।

नमो भारत रैपिड रेल ट्रांजिट सिस्टम को आधुनिक तकनीक से लैस किया जाएगा। तेज गति वाली ट्रेनें, सुरक्षित और सुविधाजनक स्टेशन, डिजिटल टिकटिंग, बेहतर निगरानी और पर्यावरण के अनुकूल ढांचा इस परियोजना की खास पहचान होगी। सड़क यातायात पर दबाव कम होने से प्रदूषण में भी कमी आने की संभावना है, जो दिल्ली-एनसीआर जैसे क्षेत्र के लिए बेहद अहम है।

कुल मिलाकर, अलवर से दिल्ली तक नमो भारत रैपिड रेल को मिली मंजूरी को विकास की नई रेखा के रूप में देखा जा रहा है। यह परियोजना केवल दो शहरों को नहीं जोड़ेगी, बल्कि राजस्थान और एनसीआर के बीच आर्थिक और सामाजिक संबंधों को और मजबूत करेगी। आने वाले वर्षों में जब यह रैपिड रेल दौड़ती नजर आएगी, तब यह क्षेत्र के विकास, रोजगार और आधुनिक परिवहन का प्रतीक बनकर उभरेगी।

फायरिंग रेंज में मौत का तांडव, विस्फोटक से खेल बन गई जिंदगी की आख़िरी भूल

(जीएनएस)। गयाजी। बाराचट्टी थाना क्षेत्र स्थित भारतीय सेना की फायरिंग रेंज शुक्रवार को उस समय भयावह हादसे की गवाह बनी, जब वहां पड़े एक पुराने विस्फोटक के अचानक फटने से 14 वर्षीय किशोर की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि उसका साथी गंभीर रूप से घायल हो गया। यह हादसा इतना भयावह था कि कुछ ही पलों में खुशहाल गांव मातम में बदल गया। धमाके की तेज आवाज दूर-दराज तक सुनाई दी और आसपास के इलाकों में अफरा-तफरी मच गई। लोग समझ ही नहीं पाए कि आखिर हुआ क्या, लेकिन जब सच्चाई सामने आई तो हर आंख नम हो गई।

मृतक की पहचान जहाजवा गांव के सेवई टोला निवासी सौरभ कुमार के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि सौरभ अपने दोस्त मुकेश कुमार के साथ किसी काम से गांव के पास स्थित फायरिंग रेंज क्षेत्र में चला गया था। यह इलाका पूरी तरह प्रतिबंधित है, जहां आम नागरिकों का प्रवेश वर्जित है। हाल ही में यहां सेना का अभ्यास हुआ था और अभ्यास के बाद कुछ विस्फोटक अवशेष जमीन पर पड़े रह गए थे। अनजान और मासूम बच्चों को इस खतरे का अंदाजा नहीं था। वे जैसे ही इन अवशेषों के पास पहुंचे, अचानक जोरदार विस्फोट हो गया। धमाका इतना तेज था कि सौरभ ने मौके पर ही दम तोड़ दिया, जबकि मुकेश गंभीर रूप से घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा।

हादसे की खबर फैलते ही गांव में कोहराम मच गया। ग्रामीण दौड़ते हुए घटनास्थल की ओर पहुंचे। वहां का मंजर देखकर हर कोई सन्न रह गया। चारों ओर धुआं, मिट्टी और खून फैला हुआ था। सौरभ का शव बुरी तरह क्षत-विक्षत अवस्था में पड़ा था। घायल मुकेश दर्द से कराह रहा था। ग्रामीणों ने तुरंत उसे उठाकर स्थानीय स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया, जहां से डॉक्टरों ने उसकी गंभीर हालत को देखते हुए मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर कर दिया। डॉक्टरों के अनुसार, मुकेश की हालत नाजुक बनी हुई है और उसका इलाज गहन निगरानी में चल रहा है।

सौरभ की मौत की खबर जैसे ही उसके घर पहुंची, परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। मां का रो-रोकर बुरा हाल हो गया, वहीं पिता बेसुध होकर जमीन पर बैठ गए। गांव में हर कोई इस घटना से स्तब्ध था। ग्रामीणों का कहना है कि बच्चे अक्सर आसपास के इलाकों में खेलते या घूमते रहते हैं, लेकिन किसी को यह अंदाजा नहीं था कि जमीन में पड़ा एक विस्फोटक इतना बड़ा खतरा बन सकता है। लोगों ने प्रशासन और सेना से सवाल किया कि अभ्यास के बाद क्षेत्र को पूरी तरह सुरक्षित क्यों नहीं किया गया।

घटना की सूचना मिलते ही बाराचट्टी थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और पूरे इलाके को घेरकर जांच शुरू कर दी। थाना प्रभारी अमरेंद्र किशोर ने बताया कि यह इलाका भारतीय सेना का अधिसूचित फायरिंग रेंज है, जहां आम लोगों का प्रवेश पूरी तरह प्रतिबंधित है। हाल ही में यहां सैन्य अभ्यास हुआ था और ग्रामीणों को सावधान भी किया गया था। इसके बावजूद यह दुखद घटना घट गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और पूरे मामले की विस्तृत जांच की जा रही है।

प्रशासन की ओर से यह भी कहा गया है कि यह जांच की जाएगी कि विस्फोटक अवशेष वहां क्यों और कैसे रह गए। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि चेतावनी बोर्ड, सुरक्षा घेरा और निगरानी व्यवस्था कितनी प्रभावी थी। ग्रामीणों का कहना है कि यदि क्षेत्र की घेराबंदी और निगरानी सख्त होती, तो शायद यह हादसा टल सकता था। घटना के बाद पूरे इलाके में डर का माहौल है। लोग अपने बच्चों को बाहर भेजने से भी सहमे हुए हैं।

यह हादसा केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं है, बल्कि पूरे समाज के लिए चेतावनी है। प्रतिबंधित सैन्य क्षेत्रों में छोटी सी लापरवाही भी जानलेवा साबित हो सकती है। एक मासूम किशोर की जान चली गई और दूसरा जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहा है। गांव में आज भी सन्नाटा पसरा है और हर कोई यही सवाल कर रहा है कि आखिर कब तक ऐसी घटनाएं मासूम जिंदगियों को निगलती रहेंगी।

अहमदाबाद-तिरुच्चिरापल्ली और हापा-नाहरलगुन साप्ताहिक स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अहमदाबाद-तिरुच्चिरापली साप्ताहिक स्पेशल और हापा-नाहरलगुन साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरे विशेष किराये पर विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार हैः

ट्रेन संख्या 09419 अहमदाबाद-तिरुचिरापल्ली साप्ताहिक स्पेशल, जिसे 26 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था उसे अब बढ़ाकर 31 दिसंबर, 2026 तक कर दिया गया है।

ट्रेन संख्या 09420 तिरुचिरापल्ली-अहमदाबाद साप्ताहिक स्पेशल जिसे 01 मार्च, 2026 तक अधिसूचित किया गया था उसे अब बढ़ाकर 03 जनवरी, 2027 तक कर दिया गया है। ट्रेन संख्या 09525 हापा-नाहरलगुन स्पेशल, जिसे 25 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था उसे अब बढ़ाकर 30 दिसंबर, 2026 तक कर दिया गया है।

ट्रेन संख्या 09526 नाहरलगुन-हापा स्पेशल, जिसे 28 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था उसे अब बढ़ाकर 02 जनवरी, 2027 तक कर दिया गया है।

ट्रेन संख्या 09419 और 09525 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 01 फरवरी, 2026 से पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी।

ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे द्वारा विरार–सूरत–वडोदरा खंड पर कवच 4.0 को कमीशन किया गया

ट्रेन संख्या 20907 दादर–भुज सायाजीनगरी एक्सप्रेस मुंबई से चलने वाली पहली कवच-सुसज्जित ट्रेन बनी

जीएनएस)। स्वदेशी ट्रेन संरक्षण प्रणाली के यात्री सेवाओं के लिए शुरू होने से रेल संरक्षा में एक बड़ा कदम यात्रियों की सुरक्षा और परिचालन उत्कृष्टता के प्रति अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करते हुए पश्चिम रेलवे ने 344 किलोमीटर लंबे विरार–सूरत–वडोदरा खंड पर यात्री ट्रेनों के लिए स्वदेशी रूप से विकसित ट्रेन संरक्षण प्रणाली कवच संस्करण 4.0 को कमीशन कर दिया है। 30 जनवरी, 2026 को एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल हुई, जब ट्रेन संख्या 20907 दादर–भुज सायाजीनगरी एक्सप्रेस मुंबई से चलने वाली पहली कवच-सुसज्जित ट्रेन बनी। यह पश्चिम रेलवे नेटवर्क पर उन्नत सुरक्षा प्रौद्योगिकी के विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, विरार–सूरत–वडोदरा खंड के 344 किलोमीटर लंबे मार्ग पर कवच प्रौद्योगिकी को कमीशन किया गया है। इस कॉरिडोर पर कवच को 49 स्टेशनों पर लागू किया गया है, जिसे 57 रेडियो संचार टावरों तथा लगभग 700 किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर केबल का सहयोग प्राप्त है। कवच एक अतिरिक्त सुरक्षा परत के रूप में कार्य करता है, जो सिगनल का खतरे की स्थिति में पार होना, अधिक गति तथा टक्करों जैसी मानवीय त्रुटियों से उत्पन्न जोखिमों को न्यूनतम करने में सहायक है। साथ ही, लेवल क्रॉसिंग पर स्वचालित सीटी (ऑटो-व्हिसलिंग) और लोको पायलट के केबिन में सिगनल पहलू की पुनरावृत्ति जैसी विशेषताओं के माध्यम से प्रतिकूल मौसम और कम दृश्यता की परिस्थितियों में भी परिचालन सुरक्षा को और सुदृढ़ करता है।

पश्चिम रेलवे द्वारा इससे पूर्व दिसम्बर 2025 में वडोदरा–अहमदाबाद खंड पर कवच प्रणाली को कमीशन किया गया था। विरार–वडोदरा खंड के कमीशन होने के साथ ही, वर्तमान में पश्चिम रेलवे पर कुल 435 रूट किलोमीटर में कवच प्रणाली लागू की जा चुकी है।

श्री विनीत ने आगे कहा कि भारतीय रेल द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित कवच प्रौद्योगिकी एक तकनीकी रूप से उन्नत एवं लागत-प्रभावी सुरक्षा समाधान है, जो रेलवे सुरक्षा प्रणालियों में आत्मनिर्भर भारत का प्रतीक है।

पहले से कमीशन किए गए खंडों के अतिरिक्त, पश्चिम रेलवे के 2667 रूट किलोमीटर को कवर करने वाले अन्य कई खंडों पर कवच कार्य तीव्र गति से प्रगति पर है, जिसकी अनुमानित लागत लगभग 1435 करोड़ है। इसके अलावा, 2476 मार्ग किलोमीटर पर कवच कार्यों के लिए स्वीकृति हेतु प्रस्ताव भी किए गए हैं, जो इस कार्यक्रम के व्यापक स्तर और तीव्र गति को दर्शाते हैं। चरणबद्ध क्रियान्वयन के साथ, पश्चिम रेलवे अपने संपूर्ण ब्रॉड गेज नेटवर्क पर कवच के विस्तार की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है, जिससे समग्र रेल सुरक्षा सुदृढ़ीकरण के प्रति उसकी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता पुनः पुष्ट होती है। अपने नेटवर्क पर उन्नत सुरक्षा प्रणालियों की तैनाती में निरंतर प्रगति के साथ पश्चिम रेलवे देश के लिए एक अधिक सुरक्षित, विश्वसनीय और भविष्य-तैयार रेलवे प्रणाली के निर्माण की दिशा में दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ रहा है।

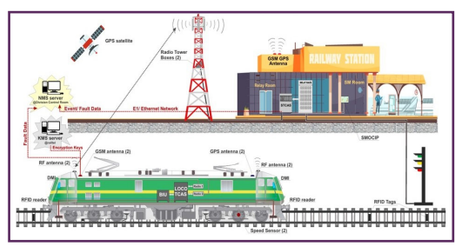

सोना वायदा 9903 रुपये और चांदी वायदा 47987 रुपये लुढ़काः क्रूड ऑयल वायदा 33 रुपये फिसला

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 101068 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 67529 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 86951 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 46400 पॉइंट के स्तर पर

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 168610.81 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 101068.42 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 67529.56 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 46400 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3137.37 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 86951.70 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 167899 रुपये के भाव पर खूलकर, 168000 रुपये के दिन के उच्च और 159239 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 169403 रुपये के पिछले बंद के सामने 9903 रुपये या 5.85 फीसदी की गिरावट के साथ 159500 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 8569 रुपये या 5.76 फीसदी लुढ़ककर 140298 रुपये प्रति 8 ग्राम बोला गया। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 1066 रुपये या 5.69 फीसदी लुढ़ककर 17680 रुपये प्रति 1 ग्राम बोला गया। सोना-मिनी फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 168990 रुपये के भाव पर खूलकर, 170954 रुपये के दिन के उच्च और 160697 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 10257 रुपये या 6 फीसदी लुढ़ककर 160697 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 182600 रुपये के भाव पर खूलकर, 185000 रुपये के दिन के उच्च और 173360 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 184425 रुपये के पिछले बंद के सामने 7806 रुपये या 4.23 फीसदी लुढ़ककर 176619 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 383898 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 389986 रुपये और नीचे में 351906 रुपये पर पहुंचकर, 399893 रुपये के पिछले बंद के सामने 47987 रुपये या 12 फीसदी लुढ़ककर 351906 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 47912 रुपये या 11.67 फीसदी औंधकर 362792 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 48277 रुपये या 11.74 फीसदी गिरकर 362782 रुपये प्रति किलो हुआ। मेटल वर्ग में 9707.35 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 73.5 रुपये या 5.21 फीसदी औंधकर 1338 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 12.3 रुपये या 3.61 फीसदी घटकर 328.45 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 13.65 रुपये या 4 फीसदी लुढ़ककर 327.85 रुपये प्रति किलो बोला गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 7.05 रुपये या 3.5 फीसदी लुढ़ककर 194.6 रुपये प्रति किलो बोला गया।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 2590.66 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 5938 रुपये के भाव पर खूलकर, 6001 रुपये के दिन के उच्च और 5896 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 33 रुपये या 0.55 फीसदी गिरकर 5999 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 32 रुपये या 0.53 फीसदी गिरकर 5999 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा 354.9 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 359.2 रुपये और नीचे में 351.6 रुपये पर पहुंचकर, 352 रुपये के पिछले बंद के सामने 6.5 रुपये या 1.85 फीसदी की तेजी के संग 358.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 7.1 रुपये या 2.02 फीसदी की बढ़त के साथ 358.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा 997 रुपये पर खूलकर, 20 पैसे या 0.02 फीसदी की नरमी के साथ 991.9 रुपये प्रति किलो पर आ गया। कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 51364.66 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 35587.05 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 8285.55 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 830.70 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 63.25 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 515.46 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 698.02 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1883.70 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 3.36 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 17628 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 116866 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 38286 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 563817 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 63023 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 13448 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 33262 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 96677 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 23663 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 17939 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 48300 पॉइंट पर खूलकर, 51199 के उच्च और 46400 के नीचले स्तर को छूकर, 2933 पॉइंट घटकर 46400 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल फरवरी 6000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 22.4 रुपये की गिरावट के साथ 312 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.65 रुपये की बढ़त के साथ 41.1 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 180000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 6861 रुपये की गिरावट के साथ 7300 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 400000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 25618.5 रुपये की गिरावट के साथ 21201 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1390 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 43.41 रुपये की गिरावट के साथ 55.02 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 342.5 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 83 पैसे के सुधार के साथ 6.99 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल फरवरी 5900 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 22 रुपये की बढ़त के साथ 274.7 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 3.9 रुपये की गिरावट के साथ 33.1 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 160000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 2704.5 रुपये की बढ़त के साथ 4465.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 6766.5 रुपये की बढ़त के साथ 14000 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 17.7 रुपये की बढ़त के साथ 44.37 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 277.5 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 16 पैसे के सुधार के साथ 0.39 रुपये हुआ।

पश्चिम रेलवे द्वारा 1 फरवरी 2026 को चर्चगेट और मुंबई सेंट्रल के बीच जम्बो ब्लॉक

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा रविवार, 1 फरवरी 2026 को चर्चगेट और मुंबई सेंट्रल स्टेशनों के बीच अप एवं डाउन फास्ट लाइनों पर ट्रैक, सिगनलिंग प्रणाली तथा ओवरहेड उपकरणों के अनुरक्षण हेतु जम्बो ब्लॉक लिया जायेगा। यह ब्लॉक 10:35 बजे से 15:35 बजे तक कुल पाँच घंटे को होगा।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक अवधि के दौरान सभी फास्ट लाइन की ट्रेनें चर्चगेट और मुंबई सेंट्रल स्टेशनों के बीच स्लो लाइनों पर चलाई जाएँगी। इसके अलावा, कुछ अप एवं डाउन उपनगरीय सेवाएँ निरस्त रहेंगी, जबकि चर्चगेट की ओर जाने वाली कुछ ट्रेनों को बांद्रा/दादर पर ही शॉर्ट-टर्मिनेट कर वहीं से रिटर्न चलाया जाएगा। प्रभावित ट्रेनों की विस्तृत सूची उपनगरीय खंड के सभी स्टेशनों पर स्टेशन मास्टरों के पास उपलब्ध रहेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखें और तदनुसारद अपनी यात्रा की योजना बनाएँ।

पश्चिम रेलवे द्वारा विभिन्न गंतव्यों के बीच दो जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से विभिन्न गंतव्यों के बीच चल रही दो जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैः

1. ट्रेन संख्या 09085/09086 मुंबई सेंट्रल – इंदौर त्रि-साप्ताहिक स्पेशल

ट्रेन संख्या 09085 मुंबई सेंट्रल – इंदौर त्रि-साप्ताहिक स्पेशल को 27 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09086 इंदौर – मुंबई सेंट्रल त्रि-साप्ताहिक स्पेशल को 28 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है। 2. ट्रेन संख्या 09057/09058 सूरत – मंगलुरु द्वि-साप्ताहिक स्पेशल

ट्रेन संख्या 09057 सूरत – मंगलुरु द्वि-साप्ताहिक स्पेशल को 25 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09058 मंगलुरु – सूरत द्वि-साप्ताहिक स्पेशल को 26 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

इसके अतिरिक्त, ट्रेन संख्या 09057 सूरत – मंगलुरु स्पेशल के समय में संशोधन किया गया है और अब यह ट्रेन सूरत से 19:40 बजे के बजाय 19:35 बजे प्रस्थान करेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09058 मंगलुरु – सूरत स्पेशल अब मंगलुरु से 22:10 बजे के बजाय 22:30 बजे प्रस्थान करेगी।

ट्रेन संख्या 09085, 09086 एवं 09057 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 31 जनवरी, 2026 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

भारत की तिजोरी पहले से कहीं ज्यादा मजबूत, विदेशी मुद्रा भंडार ने रचा नया इतिहास

जीएनएस)। नई दिल्ली। वैश्विक स्तर पर जारी आर्थिक अनिश्चितताओं, भू-राजनीतिक तनावों और बाजारों में उतार-चढ़ाव के बीच भारत की आर्थिक मजबूती का एक और बड़ा प्रमाण सामने आया है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार अब तक के सर्वाधिक ऊंचे स्तर पर पहुंच गया है। 23 जनवरी को समाप्त सप्ताह में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 709.41 अरब डॉलर हो गया, जो अपने आप में एक नया ऑल टाइम हाई रिकॉर्ड है। इससे पहले सितंबर 2024 में विदेशी मुद्रा भंडार 704.89 अरब डॉलर के स्तर तक पहुंचा था, जिसे उस समय ऐतिहासिक माना गया था, लेकिन मौजूदा आंकड़ों ने उस रिकॉर्ड को भी पीछे छोड़ दिया है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी ताजा आंकड़ों के मुताबिक, सिर्फ एक सप्ताह के भीतर विदेशी मुद्रा भंडार में 8.05 अरब डॉलर की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। यह बढ़ोतरी ऐसे समय में हुई है, जब दुनिया के कई देशों की अर्थव्यवस्थाएं मंदी, महंगाई और कर्ज के दबाव से जूझ रही हैं। इससे ठीक एक सप्ताह पहले भी भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 14.16 अरब डॉलर की तेज बढ़ोतरी देखी गई थी, जिसके बाद कुल भंडार 701.36 अरब डॉलर तक पहुंच गया था।

राज्य के 2666 गाँवों को मिलेगा अपना ग्राम पंचायत घर

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में 663 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित होने वाले ग्राम पंचायत घर-सह-पटवारी आवासों का एक साथ एक ही स्थान से ई-शिलान्यास करने का समारोह आयोजित हुआ

- गुजरात की सभी ग्राम पंचायतों को उनका अपना पंचायत घर देकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए सेचुरेशन के विचार को साकार कराने के लिए राज्य सरकार का महत्वपूर्ण निर्णय
- मुख्यमंत्री ने आणंद के भादरण से 'मुख्यमंत्री ग्रामोत्थान योजना' लॉन्च की
- पंचायत मंत्री श्री ऋषिकेशभाई पटेल, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी तथा पंचायत राज्य मंत्री श्री संजयसिंह महिडा की प्रेरक उपस्थिति
- तहसील मुख्यालय हो और नगर पालिका न हो; ऐसे 114 गाँवों को 'मुख्यमंत्री ग्रामोत्थान योजना' के प्रथम चरण में समाविष्ट किया जाएगा, ऐसे गाँवों को शहरी समकक्ष सुविधा मिलने से उनका गुणात्मक एवं सर्वांगीण विकास होगा

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शुक्रवार को आणंद के भादरण में आयोजित समारोह से राज्य की 2666 ग्राम पंचायतों के लिए उनके अपने ग्राम पंचायत घर-सह-पटवारी आवासों का एक साथ एक ही स्थान से ई-शिलान्यास करते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत के लिए गाँवों के इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट पर जो फोकस किया है, उसमें गुजरात अग्रसर रहने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस संदर्भ में श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा 100 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति का दिया गया सेचुरेशन अप्रोच गुजरात में साकार करने के लिए राज्य सरकार ने आगामी दिवसों में राज्य की सभी ग्राम पंचायतों को उनके अपने पंचायत घर-सह-पटवारी आवास देने का महत्वाकांक्षी निर्णय किया है।

मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि इन 2666 गाँवों में कुल 663 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित होने वाले ग्राम पंचायत घर-सह-पटवारी आवासों के परिणामस्वरूप ग्रामीण नागरिकों को स्थानीय स्तर से ही सरकारी सेवाएँ आसानी से उपलब्ध होंगी। उन्होंने इस अवसर पर पंचायत एवं ग्रामीण गृह निर्माण मंत्री श्री ऋषिकेशभाई पटेल, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी तथा पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री संजयसिंह महिडा और अन्य महानुभावों की उपस्थिति में 'मुख्यमंत्री ग्रामोत्थान योजना' की राज्यव्यापी लॉन्चिंग भी की।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि राज्य के 114 तहसील मुख्यालयों वाले ऐसे गाँव, जो तहसील मुख्यालय हैं; लेकिन नगर पालिका नहीं हैं, को 'मुख्यमंत्री ग्रामोत्थान योजना' के प्रथम चरण में समाविष्ट कर रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर, पानी, स्वच्छता, सोलर स्ट्रीट लाइट, ई-ग्राम, कम्युनिटी हॉल आदि शहरी समकक्ष आधुनिक सुविधाएँ प्रदान की जाएंगी।

उन्होंने जोड़ा कि शहरों पर बोझ कम हो तथा शहरों जैसी सुविधाएँ गाँवों में मिलें; इस आशय से आगामी समय में राज्य में 10 हजार से अधिक जनसंख्या वाली ग्राम पंचायतों को 'मुख्यमंत्री ग्रामोत्थान योजना' अंतर्गत लाने का राज्य सरकार का लक्ष्य है। इसके फलस्वरूप ग्रामीण एवं शहरी विकास के बीच अंतर घटेगा तथा 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' का प्रधानमंत्री का मंत्र समग्र एवं संतुलित विकास से साकार होगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने विकास की राजनीति को गति देने वाले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विजनरी लीडरशिप का उल्लेख करते हुए कहा कि विकास का स्केल व स्पीड बढ़े हैं। शहरों में बढ़ते शहरीकरण के दबाव को संतुलित करने के लिए ग्रामीण विकास को केन्द्र में रखकर विशेष आयोजन किया जा रहा है। इसमें ग्राम पंचायतों के उत्थान के लिए केन्द्रित ऐसा कार्यक्रम राज्य में पहली बार आयोजित हो रहा है।

उन्होंने कहा कि जल संरक्षण के लिए 'कैच द रेन' अभियान अंतर्गत वर्षा जल संचय तथा भूमिगत जल रिचार्ज के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। हर विधायक को 50 लाख रुपए का विशेष अनुदान आवंटित किया गया है, जिससे स्थानीय स्तर पर रिचार्जिंग व्यवस्थाएँ की जा सकें। मुख्यमंत्री ने गाय आधारित प्राकृतिक कृषि अपनाने की अपील करते हुए सभी से भूमि का स्वास्थ्य सुधारने तथा भावी पीढ़ी को निरोगी भविष्य देने का संकल्प लेने को कहा।

30 जनवरी शहीद दिवस तथा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में मुख्यमंत्री ने पूज्य बापू को हृदयपूर्वक श्रद्धांजलि देकर देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों का भाव स्मरण किया। श्री पटेल ने कहा कि गांधीजी ने ग्राम स्वराज का संदेश देकर गाँवों को स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर बनाने का मार्ग दर्शाया था। उनकी यह विचारधारा आज भी राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरणास्रोत बनी है।

इस अवसर पंचायत एवं ग्रामीण गृह निर्माण मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल ने कहा कि मृदु तथा दृढ़ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में 663 करोड़ रुपए की लागत से समग्र राज्य में 2666 ग्राम पंचायत भवनों का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया है, जिससे गुजरात के गाँवों के विकास की नई दिशा मिलेगी।

उन्होंने इस अवसर पर भादरण के सरपंच श्री उदयभाई पटेल को गाँव के सर्वांगीण विकास के लिए अभिनंदन दिया तथा विभिन्न जिलों के गाँवों के उपस्थित सरपंचों से भादरण गाँव से प्रेरणा लेने का अनुरोध किया।

उन्होंने कहा कि समग्र राज्य में सरपंच तथा पटवारी-सह-मंत्री एक ही स्थान पर बैठकर गाँव के विकास के लिए ठोस कार्य कर सकें; इसके लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 10 हजार से अधिक आधुनिक ग्राम सचिवालय बनाने की मंशा व्यक्त कर महात्मा गांधी के कथन 'गाँवों में भारत की आत्मा बसती है' को सही अर्थ में सार्थक किया है।

समारोह में उपस्थित खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी ने महानुभावों का स्वागत करते हुए कहा कि आज का दिन गुजरात के ग्रामीण विकास के लिए गौरवपूर्ण है। राज्य की 2666 नई ग्राम पंचायतों के पंचायत घर-सह-पटवारी आवासों के ई-शिलान्यास तथा 114 गाँवों में 'मुख्यमंत्री ग्रामोत्थान योजना' की लॉन्चिंग के साथ सुदूरवर्ती नागरिक तक सुविधाएँ पहुँचाने का सरकार का संकल्प साकार हो रहा है। उन्होंने इसके लिए प्रजाभिमुख प्रशासन से युक्त भादरण जैसे गाँव के चयन के लिए हर्ष की भावना व्यक्त की। साथ ही; उन्होंने भादरण गाँव के विकास मॉडल की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस गाँव ने जन सहयोग तथा सुंदर प्रशासन द्वारा राज्य में एक नई राह दिखाई है। विशेषकर पानी के लिए मीटर सिस्टम लागू कर इस गाँव ने संसाधनों के कार्यक्षम उपयोग का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इस अवसर पर जिला प्रभारी पंचायत राज्य मंत्री श्री संजयसिंह महिडा, वित्त राज्य मंत्री कमलेशभाई पटेल, सांसद श्री मितेशभाई पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री हसमुखभाई पटेल, जिला अग्रणी श्री संजयभाई पटेल, विधायक सर्वश्री विपुलभाई पटेल, योगेशभाई पटेल, पंचायत विभाग के प्रधान सचिव श्री धनंजय द्विवेदी, विकास आयुक्त श्री हितेश कोया, जिला कलेक्टर श्री प्रवीण चौधरी, जिला विकास अधिकारी सुश्री देवहूति, जिला पुलिस अधीक्षक श्री गौरव जसाणी, निवासी अपर कलेक्टर श्री आर. एस. देसाई और बड़ी संख्या में विभिन्न जिलों के गाँवों के सरपंच उपस्थित रहे।

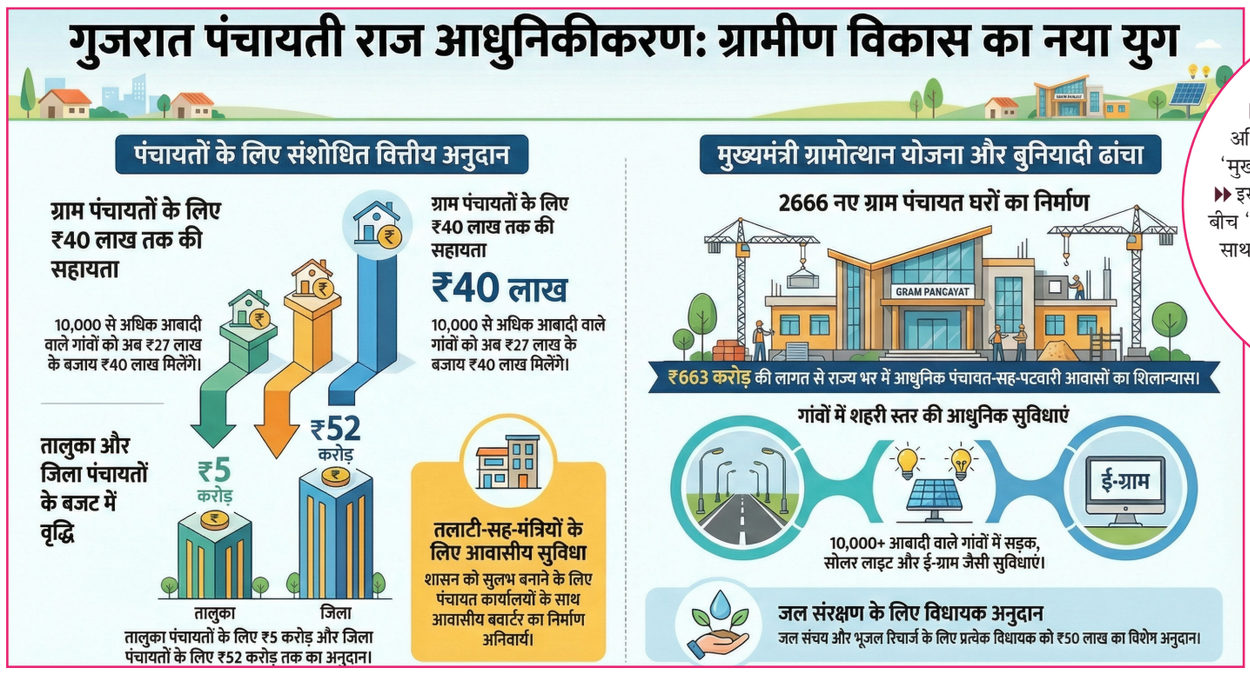

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- आगामी समय में राज्य की 10 हजार से अधिक जनसंख्या वाली सभी ग्राम पंचायतों तक 'मुख्यमंत्री ग्रामोत्थान योजना' के विस्तार का लक्ष्य
- इस योजना के जरिये ग्रामीण एवं शहरी विकास के बीच 'समग्र तथा संतुलित' विकास का विजन 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र से साकार होगा
- महात्मा गांधी की ग्राम स्वराज की विचारधारा आज राष्ट्र निर्माण के संकल्प की प्रेरणास्रोत बनी है

भारतीय रेल की पहली LNG ट्रेन का सफल संचालन

जीएनएस)। मण्डल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश ने दिनांक 30.01.2026 को पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद स्थित इंटीग्रेटेड कोचिंग डिपो (ICD), साबरमती में भारतीय रेलवे की पहली एलएनजी-डीजल आधारित ड्यूल फ्यूल DEMU ट्रेन का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने मीडिया से बातचीत करते हुए इस अभिनव पहल की विस्तृत जानकारी दी। उन्होने बताया कि भारतीय रेल ने स्वच्छ, पर्यावरण–अनुकूल एवं किफायती रेल परिचालन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भारतीय रेलवे में पहली बार डीजल इलेक्ट्रिक मल्टीपल यूनिट (DEMU) के ड्राइविंग पावर कार (DPC) में लिक्विफाइड नेचुरल गैस (LNG) आधारित ड्यूल फ्यूल प्रणाली को सफलतापूर्वक अपनाया गया है। इस योजना के अंतर्गत 1400 एचपी के दो DEMU DPC को डीजल + एलएनजी ड्यूल फ्यूल प्रणाली में परिवर्तित किया गया है, जिसमें लगभग 40 प्रतिशत तक डीजल के स्थान पर एलएनजी का उपयोग किया जा रहा है। इन दोनों परिवर्तित DPC पर 2000 किलोमीटर से अधिक का सफल फील्ड ट्रायल किया जा चुका है तथा वर्तमान में ये बिना किसी समस्या के नियमित यात्री सेवा में संचालित हो रहे हैं।

LNG (लिक्विफाइड नेचुरल गैस) ड्यूल फ्यूल प्रणाली के प्रमुख लाभ

1.पर्यावरणीय लाभ

- इंजन से निकलने वाले प्रदूषकों में उल्लेखनीय कमी, विशेष रूप से कार्बन डाइऑक्साइड (CO), नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx) और पार्टिकुलेट मैटर (PM) में कमी।
- रेलवे मार्गों के आसपास वायु गुणवत्ता में सुधार तथा राष्ट्रीय पर्यावरणीय लक्ष्यों की पूर्ति में सहायता।

2.ईंधन लागत में कमी

- एलएनजी, डीजल की तुलना में सस्ता है। आंशिक रूप से डीजल के स्थान पर एलएनजी के उपयोग से परिचालन लागत में उल्लेखनीय बचत होती है।
- परीक्षण आंकड़ों के आधार पर एक DPC से लगभग 11.9 लाख प्रति वर्ष की बचत तथा एक 8-कोच DEMU रेक (2 DPC) से लगभग 23.9 लाख प्रति वर्ष की बचत संभव है।

3.परिचालन में फ्लेक्सिबिलिटी

- ड्यूल फ्यूल इंजन, ईंधन की उपलब्धता के अनुसार डीजल और एलएनजी के बीच आसानी से स्विच कर सकते हैं, जिससे सेवा में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होता।

4.प्रदर्शन में कोई कमी नहीं

- ड्यूल फ्यूल प्रणाली इस प्रकार डिजाइन की गई है कि इंजन की शक्ति और विश्वसनीयता पारंपरिक डीजल इंजन के समान बनी रहती है, जिससे बेहतर प्रदर्शन के साथ-साथ ईंधन बचत और प्रदूषण में कमी सुनिश्चित होती है।

स्वीकृत डिजाइन के अनुसार DPC में लगभग 2200 लीटर क्षमता (लगभग 950–1000 किलोग्राम उपयोगी एलएनजी) का एलएनजी टैंक स्थापित किया गया है। एक बार पूर्ण भराव से 222 किलोमीटर के दैनिक संचालन के लिए पर्याप्त एलएनजी उपलब्ध हो जाता है, जिससे बार-बार ईंधन भरने की आवश्यकता कम होती है।

"मेरा टिकट, मेरी शान – विकसित भारत के लिए मेरा योगदान" अभियान में स्काउट एण्ड गाइड की सक्रिय भागीदारी

जीएनएस)। रेल यात्रियों में टिकट खरीदने के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे के वाणिज्य विभाग द्वारा सभी मंडलों में 28 जनवरी 2026 से "मेरा टिकट, मेरी शान – विकसित भारत के लिए मेरा योगदान" नामक विशेष जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है, जो 06 फरवरी 2026 तक जारी रहेगा। इस अभियान का शुभारंभ मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा द्वारा 28.01.2026 को भावनगर टर्मिनस स्टेशन से किया गया। अभियान के अंतर्गत स्काउट एण्ड गाइड के सदस्यों द्वारा नारों, शाब्दिक संदेशों एवं नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से यात्रियों को जागरूक किया जा रहा है। उन्होंने यात्रियों से अपील की कि वे RailOne ऐप, एटीवीएम अथवा बुकिंग काउंटर से वैध टिकट लेकर ही यात्रा करें। RailOne एक ऑल-इन-वन डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जिसके माध्यम से यात्री आरक्षित एवं अनारक्षित टिकट बुकिंग, लाइव ट्रेन स्थिति, PNR जानकारी, भोजन सेवा तथा यात्री सहायता जैसी अनेक सुविधाओं का लाभ एक ही स्थान पर प्राप्त कर सकते हैं। स्काउट एण्ड गाइड के सदस्यों के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि टिकट लेकर यात्रा करना न केवल एक कानूनी दायित्व है, बल्कि विकसित भारत के निर्माण में नागरिकों का महत्वपूर्ण योगदान भी है। यात्रियों द्वारा खरीदे गए टिकटों से रेलवे का आर्थिक सुदृढ़ीकरण होता है, जिससे रेलगाड़ियाँ अधिक सुरक्षित एवं आधुनिक बनती हैं, यात्री सुविधाओं में सुधार होता है, रेल नेटवर्क का विस्तार होता है तथा स्टेशनों का कायाकल्प संभव हो पाता है। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि इस अभियान के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। भावनगर मंडल के प्रमुख स्टेशनों—भावनगर टर्मिनस, वेरावल एवं जूनागढ़—पर यह अभियान विशेष रूप से संचालित किया जा रहा है। इन स्टेशनों पर जागरूकता स्टॉल लगाए गए हैं, सेल्फी प्वाइंट की सुविधा उपलब्ध कराई गई है तथा बैनर एवं पोस्टर के माध्यम से यात्रियों को संदेश दिया जा रहा है। जूनागढ़ स्टेशन पर स्कूली बच्चों ने भी इस अभियान में उत्साहपूर्वक भाग लिया। उन्होंने यात्रियों को टिकट लेकर यात्रा करने हेतु प्रेरित किया तथा स्वयं भी सदैव वैध टिकट लेकर यात्रा करने का संकल्प लिया। इस अभियान में यात्रियों ने भी बढ़-चढ़कर सहभागिता की और अन्य यात्रियों से उचित यात्रा टिकट लेकर रेल यात्रा करने की अपील की।

वडोदरा - विरार सेक्शन पर कवच 4.0 का सफलतापूर्वक कमीशन,मुंबई (विरार) और अहमदाबाद रेलखंड हुआ कवच से पूर्ण सुरक्षित

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा रेल परिचालन में संरक्षा को और मजबूत करते के क्रम में 30 जनवरी,2026 को 344 किलोमीटर लंबे वडोदरा - विरार सेक्शन पर कवच 4.0 सिस्टम को सफलतापूर्वक कमीशन किया गया। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा इससे पहले दिसंबर 2025 में वडोदरा-अहमदाबाद सेक्शन पर कवच सिस्टम चालू किया था और आज मंडल द्वारा सूरत और वडोदरा सेक्शन पर इसे कमीशन किया गया है। इस प्रकार मुंबई (विरार) और अहमदाबाद रेलखंड कवच से लैस हो गया है।

वडोदरा के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने मुंबई से कवच सिस्टम के साथ चलने वाली पहली ट्रेन 20907 दादर - भुज सयाजी नगरी एक्सप्रेस के वडोदरा आगमन पर मीडिआ को सम्बोधित करते हुए बताया कि पश्चिम रेलवे के नागदा-वडोदरा-सूरत-विरार-मुंबई सेंट्रल सेक्शन पर कवच को 397 करोड़ रुपये की लागत से मंजूरी दी गई है। वडोदरा-सूरत-विरार सेक्शन पर काम जनवरी, 2023 में शुरू हुआ और आज इस सेक्शन में कवच कमीशन कर लिया गया है। 344 किलोमीटर लंबे विरार - वडोदरा खंड पर स्वदेशी स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली 'कवच' प्रणाली के अंतर्गत 49 स्टेशनों को कवर किया गया है, 57 टावर स्थापित किये गए है और 688 किलो मीटर ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाई गयी है। इस सेक्शन में इस प्रणाली के कमीशन होने से संरक्षा में वृद्धि के साथ साथ उच्च गति पर भी सुरक्षित ट्रेन परिचालन सुनिश्चित होगा।

उन्होंने बताया कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आत्मनिर्भर भारत के विज़न को माननीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव के मार्गदर्शन में रेलवे में टेक्नोलॉजी में आत्मसात किया जा रहा है। कवच एक स्वदेशी रूप से विकसित ऑटोमैटिक ट्रेन प्रोटेक्शन (ATP) सिस्टम है, जो सिग्नल पास एट डेंजर (SPAD) की रोकथाम के साथ - साथ ऑटोमैटिक स्पीड कंट्रोल एवं आमने-सामने और पीछे से टक्करों से सुरक्षा जैसी कार्यक्षमताएं प्रदान करती है। यह ट्रैक पर RFID टैग और ट्रैक, सिग्नल और लोकोमोटिव के बीच कम्युनिकेशन के लिए अल्ट्रा-हाई रेडियो फ्रीक्वेंसी (UHF) का इस्तेमाल करता है, जिससे केबिन में लोको पायलटों को रियल-टाइम जानकारी मिलती है, और यह सुरक्षित और ज़्यादा कुशल यात्राओं के लिए एक सतर्क रक्षक की तरह काम करता है।

वर्तमान में, कवच WAP-7 लोकोमोटिव पर सक्षम है। जल्द ही, इसे अन्य लोकोमोटिव पर भी शुरू किया जाएगा। लोकोमोटिव पर कवच लगाने का काम भी अच्छी तरह से आगे बढ़ रहा है और अब तक WR पर कुल 364 लोकोमोटिव में कवच लगाया जा चुका है। वडोदरा-नागदा पर काम पूरी तेज़ी से चल रहा है और उम्मीद है कि यह मार्च, 2026 तक इसे पूरा कर लिया जायेगा। पश्चिम रेलवे जल्द से जल्द पूरे BG रूट पर कवच का काम पूरा करने के लिए तैयार है।

भावनगर रेलवे मंडल पर शहीद दिवस के अवसर पर दो मिनट का मौन रखकर वीर शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

जीएनएस)। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले अमर शहीदों की स्मृति में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल पर 30 जनवरी 2026 को शहीद दिवस श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंडल कार्यालय, रेलवे स्टेशनों, हेल्थ यूनिटों तथा कोचिंग डिपो सहित मंडल के सभी प्रतिष्ठानों में प्रातः 11.00 बजे दो मिनट का मौन रखकर वीर शहीदों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि शहीद दिवस के उपलक्ष्य में मंडल कार्यालय में मौन अवधि के प्रारंभ एवं समाप्ति पर सायरन बजाकर सभी विभागीय कर्मचारियों को सचेत किया गया, जिससे कार्यक्रम का अनुशासित एवं गरिमामय आयोजन सुनिश्चित हो सके। इस अवसर पर मंडल कार्यालय के लॉबी में मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा, अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा सहित मंडल के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने एकत्र होकर दो मिनट का मौन रखकर देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीर शहीदों को नमन किया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने शहीदों के बलिदान को स्मरण करते हुए उनके आदर्शों को अपने जीवन और कार्य में अपनाने का संकल्प भी लिया।

गुजरात की 'स्वतंत्रता का मंत्र : वंदे मातरम्' थीम आधारित झाँकी को 'पॉपुलर चॉइस श्रेणी' में प्रथम स्थान का पुरस्कार नई दिल्ली में विधिवत् रूप से प्रदान किया गया

- गुजरात राज्य की ओर से मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे तथा सूचना आयुक्त श्री किशोर बचाणी ने ट्रॉफी स्वीकार की
- लगातार चार वर्ष पॉपुलर चॉइस पुरस्कार के साथ वर्ष 2024 में जूरीस चॉइस पुरस्कार सहित गुजरात को चार वर्ष में कुल 5 पुरस्कार मिले

जीएनएस)। गांधीनगर : 77वें गणतंत्र पर्व के उपलक्ष्य में नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर आयोजित परेड में गुजरात की झाँकी को लगातार चौथी बार 'पॉपुलर चॉइस श्रेणी' में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए शुक्रवार को विधिवत् रूप से ट्रॉफी एवं पुरस्कार प्रदान किए गए हैं।

शुक्रवार को नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय रंगशाला शिविर में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री श्री संजय सेठ के करकमलों से प्रदान किए गए ट्रॉफी एवं प्रमाणपत्र को गुजरात राज्य की ओर से मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे तथा सूचना आयुक्त श्री किशोर बचाणी ने स्वीकार किया।

इसके साथ ही; झाँकी निर्माण की प्रक्रिया के समय राष्ट्रीय रंगशाला में आयोजित विभिन्न राज्यों के कलाकारों के सांस्कृतिक नृत्यों की प्रतियोगिता में गुजरात के नृत्य को प्रोत्साहक पुरस्कार प्राप्त हुआ। यहाँ उल्लेखनीय है कि 'स्वतंत्रता का मंत्र : वंदे मातरम्' विषय पर आधारित इस वर्ष की झाँकी का गुजरात सरकार के सूचना आयुक्त कार्यालय द्वारा निर्माण किया गया था। सूचना आयुक्त श्री किशोर बचाणी के दिशादर्शन तथा अपर सूचना निदेशक श्री अरविंद पटेल के मार्गदर्शन में संयुक्त सूचना निदेशक डॉ. संजय कचोट एवं फिल्म प्रोडक्शन शाखा की सूचना उप निदेशक सुश्री भावना वसावा द्वारा इस झाँकी के निर्माण का समग्र कार्य किया गया था।

इससे पहले वर्ष 2023 में नवीकरणीय ऊर्जा के अधिकतम् उपयोग के आह्वान को साकार करने में गुजरात की पहल के रूप में प्रस्तुत की गई 'क्लीन ग्रीन एनर्जीयुक्त गुजरात' झाँकी को 'पॉपुलर चॉइस श्रेणी' में पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इसके साथ शुरू हुई विजय परंपरा को आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2024 में प्रस्तुत की गई गुजरात की 'धोरडो : वर्ल्ड बेस्ट टूरिज्म विलेज' थीम आधारित झाँकी ने 'पॉपुलर चॉइस श्रेणी' में पुरस्कार प्राप्त करने के साथ-साथ झाँकियों की श्रेष्ठता की चयन समिति की 'जूरीस चॉइस' श्रेणी में भी दूसरा स्थान प्राप्त किया। वर्ष 2025 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में गुजरात ने आधुनिक विकास की जो लंबी छलांग लगाई है, उसकी विकास गाथा तथा प्राचीन विरासत की झाँकी दर्शाने वाली 'अनार्तपुरथी एकतानगर सुधी – विरासतथी विकासनो अद्भुत संगम' झाँकी ने 'पॉपुलर चॉइस पुरस्कार' जीता। इसके बाद लगातार चौथे वर्ष इस श्रेणी में वर्ष 2026 का राष्ट्रीय पुरस्कार जीतकर गुजरात ने इतिहास रचा है।